श्रीवेदवेदान्तसारशिरोमणि।

जिसमें

प्रथम ॐकारके अंग, लक्षण, भाव, देवता, गुण, तत्त्व, पद, वर्ण, स्वरूप, प्रत्यंगभाव व ॐकार व्याख्या। व ॐकार उपासना, मूर्त्तिनिर्माण व दश अवतार व प्रश्नोत्तर विधिनिषेधादि श्रुतियोंकी रीति से वर्णितहैं

जिसको।

श्रीकाशीपुरनिवासि श्रीब्रह्मानंद सरस्वतीजी के शिष्य श्रीभास्करानंद सरस्वती व तदधिकारी श्रीहरिहरानंद सरस्वतीजीने संपूर्णधार्म्मिक पुरुषोंके अवलोकनार्थ अतीव परिश्रम से निर्म्मित किया

55

तीसरीबार

लखनऊ

सुपरिन्टेन्डेन्ट बाबू मनोहरलाल भार्गव के प्रबन्ध से॥
मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपी

सन १६०६ ई०

कापीराइट महफूज है बहक इस छापेखाने के

६ जुज ४ पृष्ठ

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

वेदवेदान्तसारशिरोमणि

सटीक ॥

ॐ तत्सत्पित्तपवित्रात्मनेनमः ॥

तपःसंयुक्तस्य प्रणवस्वरूपं विश्वं देव
श्च सत्यंभवति ॐकारः ॐकारस्य लक्ष
णाङ्गभावं न जानाति नचवैश्यक्षत्रियाश्च
ब्राह्मणाः ॐकारं पृच्छामः कोधातुः किं
प्रातिपदिकं किंनामाख्यातं किंलिङ्गं किं
वचनं काविभक्तिः कः प्रत्ययः कःस्वर
उपसर्गोनिपातः किंवैव्याकरणं कोविका
रः कोविकारी कतिमात्रः कतिवर्णः कत्य
क्षरः कतिपदः कःसंयोगः किंस्थानानुप्र

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दानकरणं शिक्षुकाः किमुच्चारयन्ति किं छन्दः कोवर्ण इतिपूर्वैप्रश्ना अथोत्तरेमन्त्रः ॥ कल्पोब्राह्मणमृग्यजुःसाम कस्माद्ब्रह्मवादिन ॐकारमादितः कुर्वन्तिकिंदैवतं किं ज्योतिषं किं निरुक्तं किं स्थानं काप्रकृतिः किमध्यात्ममिति षट्त्रिंशत्प्रश्नाः पूर्वोत्तराणांत्रयोवर्गा द्वादशका एतैरोङ्कारं व्याख्यास्यामः इन्द्रः प्रजापतिमपृच्छद्भगवन्नभिसूयपृच्छामीति पृच्छवत्सेत्यब्रवीत् किमयमोङ्कारःकस्यपुत्रः किंचैतच्छन्दः किंचैतद्वर्णः किंचैतद्ब्रह्माब्रह्मसम्पद्यते तस्माद्वैतद्भद्रमोङ्कारं पूर्वमालेभे स्वरितोदात्तएकाक्षर ॐकार ऋग्वेदेत्रैस्वर्योदात्त एकाक्षर ॐकारो यजुर्वेदेदीर्घप्लु

तोदात्तएकाक्षरॐकारःसामवेदेह्रस्वोदात्त
एकाक्षरॐकारोऽथर्ववेद उदात्तोदात्तद्वि
पद अ उ इत्यर्द्धचतस्रोमात्रामकारे व्यञ्ज
नमित्याहुर्यासा प्रथमामात्रा ब्रह्मदेवत्या
रक्तावर्णेन यस्तांध्यायतेनित्यं सगच्छेद्
ब्राह्मयंपदं यासाद्वितीयामात्रा विष्णुदेव
त्याकृष्णावर्णेन यस्ताध्यायतेनित्यं सग
च्छेद्वैष्णवंपदं यासातृतीयामात्रैशानदेव
त्याकपिलावर्णेन यस्तांध्यायतेनित्यं स
गच्छेदैशानंपदं यासार्द्धचतुर्थीमात्रा सर्व
देवत्या व्यक्तीभूताखं विचरतिशुद्धस्फटि
कसन्निभावर्णेन यस्तांध्यायतेनित्यं सग
च्छेत्पदमनामयमोङ्कारस्यचोत्पत्तिर्विप्रो
योनजानाति तत्पुनरुपनयनंतस्माद्ब्रा

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ह्मणवचनमादर्त्तव्यं यथाल्लातव्योगोत्रो
ब्रह्मणः पुत्रोगायत्रंछन्दः शुक्लोवर्णः पुं
सोवत्सोरुद्रोदेवताॐकारोवेदानाम् को
धातुरित्याप्टधांतुरवतिमप्येके रूपसामा
न्यादर्थसामान्यान्नेदी यस्तस्मादापेरोङ्का
रः सर्वमाप्नोत्यर्थः कृदन्तमर्थवत् प्राति
पदिकमदर्शनंप्रत्ययस्यनामसम्पद्यते नि
पातेषुचैनं वैयाकरणउदात्तं समामनन्ति
तदव्ययीभूतमन्वर्थवाचीशब्दो न व्येति
कदाचनेति सदृशंत्रिषुलिङ्गेषुसर्वासुचवि
भक्तिषु वचनेषुचसर्वेषुयन्नव्येतितदव्ययं
कोविकारीच्यवते प्रसारणमाप्नोति शकार
षकारौविकार्य्यावादित ॐकारो विक्रियते
द्वितीयोमकारएवंद्विवर्ण एकात्तर ओमि

त्योङ्कारोनिर्वृतः कतिमात्र इत्यादेस्ति स्रो मात्रा अभ्यादानेहिप्लवते मकारश्च तुर्थीङ्किस्थानमित्युभावष्टौस्थानं नादानु प्रदानकरणौचद्वयस्थानं सन्ध्यक्षरमवर्ण लेशःकण्ठ्योयथोक्तशेषः पूर्वोविवृतकरण स्थितश्च द्वितीयस्पृष्टकरणास्थितश्च न संयोगो विद्यूत आख्यातोपसर्गानुदात्तस्व रितलिङ्गविभक्तिवचनानिच संस्थानाध्या यिन आचार्य्याः पूर्वे बभूवुः श्रवणादेव प्रतिपद्यंतेनकारणं पृच्छन्त्यथापरपत्ती याणांकविः पाञ्चालचण्डः परिपृच्छ कोबभूवाम्बुपृथगुद्गीथदोषान् भवन्तोब्रु वन्त्विति तद्वाप्युपलक्षयेद्वर्णाक्षरपदाङ्कु शो विभक्त्यामृषिनिषेवितामिति वाचं

स्तुवन्ति तस्मात् कारणं ब्रूमोवर्णानाम
यमिदं भविष्यतीतिषडङ्गविदस्तत्तथाऽ
धीमहे किंछन्द इति गायत्रं हि छन्दो
गायत्री वै देवानामेकाक्षरा श्वेतवर्णा च
व्याख्याता द्वौ द्वादशकौ वर्गावेतद्वैव्या
करणं धात्वर्थवचनं शैक्ष्यं छन्दो वचनं
चाथोत्तरौ द्वौ द्वादशकौ वर्गौ वेदरहसि
की व्याख्यातः मन्त्रः कल्पोब्राह्मणमृग्य
जुःसामाथर्वण्येषा व्याहृतिश्चतुर्णां वे
दानामानुपूर्वेणों भूर्भुवः स्वरिति व्याहृ
तयः ४ इति गोपथब्राह्मणम् ॥ व्यासः
प्रणवस्य ऋषिर्ब्रह्मा गायत्रीछन्द एवच
देवोऽग्निः सर्वकार्य्येषु विनियोगः प्रकी
र्त्तितः एवमार्षादिकंस्मृत्वा ततश्चोङ्कार

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मभ्यसेत् सार्द्धत्रिमात्रमुच्चार्य्य दीर्घघ
एटानिनादवत् त्रिमात्रस्तु प्रयोक्तव्यः स
र्व्वारम्भेषुकर्म्मसु तिस्रःसार्द्धास्तुकर्त्तव्या
मात्रास्तत्रार्थचिन्तकैः देवताध्यानकालेतु
प्लुतंकुर्य्यान्नसंशयः तैलधारावदच्छिन्नं दी
र्घघएटानिनादवत् अप्लुतं प्रणवस्यान्तं य
स्तंवेदसवेदवित् आद्यंतत्राक्षरंब्रह्म त्रयी
यत्र प्रतिष्ठिता सगुह्योऽन्यस्त्रिवृद्वेदो योवे
दैनं सवेदवित् अकारश्च उकारमकारेण
बिन्दुनासानुनासिकः शिखरमध्ये प्रण
वस्सदेवोयासार्द्धमूर्द्धन्यप्रणवस्सदेवः एत
द्गुणोयं सर्वकर्त्ताचप्रोक्तानामवीर्य्याक्षरं
प्रणवस्सव्यंजनं चार्द्धमात्रकः ऊर्ध्वग
मनं रेफस्समूर्द्धन्यश्चप्रणवः स्वभावस्स

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मयः सर्व्वसंस्थितः मोहमाया विद्याचा
विद्यानाम् कारणस्सहेतुः ह्रस्वदीर्घस्स
प्लुतः अखण्डमादित्यं प्रतिमाच सत्यं
निर्विकल्पनिर्वाणनिर्वाच्यव्यञ्जनं चार्द्ध
मात्रकं श्रुतिस्मृतिवेदवेदान्तस्य यासार्द्ध
मूर्द्धन्यप्रणवस्सदेवः वैयाकरणेच सर्व्व
शास्त्रेण प्रतिमाच सत्यं व्यञ्जनं चार्द्ध
मात्रकम् ॥

ब्रह्मने ब्रह्माको कमलके मध्य उत्पन्न किया
ब्रह्माजी ने उत्पन्न होकर सोचा कि वह कौन
मन्त्रहै जिससे सब कामना पूर्णहों और उस
से सब लोक सब देवता सब वेद सब यज्ञ
सब बातें सब नाद और चर अचरको समझूं
इसको विचारकर सब विषयों को त्यागकर

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ध्यान किया तब एकाक्षर मंत्रको देखा और
जाना वह एक शब्द है जिसकी दो योजना
और चारमात्रा हैं वह सर्व्वव्यापी सर्वेश्वरहै
नित्य है ब्रह्मकी वाणी है आपभी ब्रह्महै देवता
उसका भी ब्रह्महै इस मंत्रकी प्राप्ति से ब्रह्माजी
ने सब कामना सब लोक सब देवता सब वेद
सब यज्ञ सब नाद सब बातों और सब चर
अचर जीवोंको पाया पहिले रूपसे जल और
उसके उस गुणको जाना जिसके द्वारा वह फैले
हुये पदात्थोंको इकट्ठा करताहै और दूसरे रूप
से अग्नि और उस अग्निके प्रकाशको जाना
और प्रथम मात्रा अकार से आगे लिखीहुई
वस्तुओं को जाना पृथ्वी अग्नि वनस्पति
ऋग्वेद भूः नाम व्याहृति गायत्री छन्द नव
मंत्र सामवेद पूर्वदिशा वसंतऋतु शरीर में
वाणी जिह्वा जिह्वाका स्वाद इतनी वस्तुको

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

समुझा और दूसरी मात्रा उकारसे अन्तरिक्ष वायु यजुर्वेद भुवनाम व्याहृतित्रिष्टुप् छंद १५ मंत्र सामवेद पश्चिमदिशा ग्रीष्मऋतु शरीर में प्राण नासिका घ्राण इन्द्रिय इतनी वस्तुको समुझा और तीसरी मात्रा मकारसे स्वर्ग सूर्य सामवेद स्वःनाम व्याहृति जगती छंद सत्रह अन्यमंत्र सामवेद उत्तरदिशा वर्षा ऋतु शरीर में नेत्रोंकी ज्योति और दृष्टि इतनी वस्तु को समुझा ॥ और चौथी अर्द्धमात्रा से जल चन्द्रमा अथर्ववेद तारागण सम्पूर्ण मन्त्र प्रणव अपना जीवात्मा प्रणव की चौथी अर्द्ध-मात्रा अनुष्टुप्छन्द सत्ताईस अन्य मंत्र सामवेद दक्षिणादिशा शरद्ऋतु शरीर में मन विद्यागुरु इतनी वस्तुको समुझे और वेदों के अध्याय उत्पत्ति नाश वेदों में प्रश्नोत्तर महामंत्र उप-निषद् विधि निषेध प्रणव आदि सप्त मंत्र

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सप्तस्वर जिनसे सब उपनिषद् निकले हैं और गानविद्या और बाजे सब राग उनके देवता सहित जिसका नाम चित्ररथ है बिजली का प्रकाश बृहतीछंद जो कि सब छंदों में बड़ा है और तेंतीसमंत्र दूसरे सामवेद के ऊर्ध्वदिशा जो कि रूपान्तर नहीं पाती कान शब्द सुनना इतनी वस्तुको समुझे यह एकाक्षर प्रणव एक पूर्णमंत्रहै जो कि श्रीब्रह्माजी के तप से भी प्रथम प्रकटथा यही ब्रह्महै और वेदों का मूल है इसी प्रणवसे सब मंत्र प्रकट हुये और यह प्रणव ऐसा पदार्थ है कि कोई मंत्रोंको विना तप और सेवा गुरुके अनध्यायकालों में जप करें जिस जपसे सिद्धिमंत्रों में हानि होती है और मंत्रोंकी शक्ति न्यून होजाती है फल नहीं देते उसी जप में प्रणवको जो कि अथर्ववेदकी शक्ति है मंत्र की आदि अन्तमें उच्चारण करने

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

से मंत्रोंको शक्ति होजाती है और वे मंत्र सम्मुख होकर अपने जपकर्त्ता को फल देते हैं जिसप्रकार बालक टेढ़ाआवै तौ माताको भय है और जो सीधा गर्भ से निकलै तौ माताको भय नहीं इसीप्रकार प्रणवको मंत्रकी आदि अन्तमें उच्चारणकरनेसे सब मंत्र सीधे आतेहैं और फल देते हैं इसीप्रकार यज्ञ की आदि अन्तमें प्रणवका उच्चारण करना चाहिये कि इसी प्रणवके द्वारा यज्ञ पूर्ण होताहै दूसरी जगह वेदके मंत्रमें लिखा है कि प्रणव एक मंत्र है जो कि सब कामों की आदि अन्तमें उच्चारण किया जाताहै और वह मन्त्र महा आकाश है जिसके मध्य सम्पूर्ण देवता रहते हैं जो कोई उसको नहीं जानताहै उसको वेद के दूसरे मन्त्र से क्या काम है और जो महात्मा उसको जानते हैं वे अव्यय पद को प्राप्त

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

होते हैं जो ब्राह्मण इच्छा रखताहो उसको उचित है कि तीनदिन निराहार रहै और कुशा का आसन बिछाकर पूर्वमुख मौन होकर बैठे और प्रतिदिन मनमें सहस्र जाप प्रणव का करै जो उसकी इच्छा हो पूर्ण होवै और जो कर्म्म करै उसका फल पावै ॥ असुरोंने इन्द्र-लोकको चारोंओर से घेरि लिया देवता भय-भीतहुये कि इन असुरोंको कौन पराजय करै-गा ब्रह्मपुत्र प्रणवको देखा और उससे कहा कि आप हम सबसे बड़े हो हम सब देवता चाहते हैं कि आपकी सहायतासे असुरोंको जयकरैं प्रणवने कहा कि जो मैं तुम्हारे काम को करूं तो तुमसे मुझको क्या लाभ होगा देवताओंने कहा कि जो आप कहैं वही करैं प्रणवने कहा मैं यह कहताहूं कि जबतक मुझ को उच्चारण न करैं तबतक वेदपाठी वेदको

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

न पढ़ैं और जो मुझको उच्चारण न करके वेदको पढ़ैं तो वेद उनको कुछ फल न देवै देवताओंने अंगीकार किया देवता जिस स्थान पर यज्ञहोता है उत्तरकी ओर उस स्थानपर युद्धके अर्थ इकट्ठे हुये और वहां से प्रणवका उच्चारणकरके चले और प्रणवके द्वारा असुरों पर जय पाई इस कारणसे सबकर्म्मों में प्रणव का उच्चारण करना चाहिये जो कोई इस प्रणव को नहीं जानताहै वह किसी कार्य्य में समर्थ नहीं है और जो इसको जानता है वेद उसके आधीन होते हैं इसीकारण से जो ऋग्वेद की आदि में उच्चारण करैं ऋग्वेदी होते हैं और जो यजुर्वेद की आदि में पढ़ैं तो यजुर्वेदी होते हैं और जो सामवेद की आदिमें पढ़ैं तो सामवेदी होते हैं और जिस कर्म्मकी आदि में उसका उच्चारणकरैं उसी कर्म्ममय होते हैं यह

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मंत्र उच्चारण में आपरूपहै प्रणव कहकर पूंछा कि इस मंत्रकी मूल क्याहै और उसके उच्चारणकी क्या विधिहै किस वस्तुमें उसको मिलाते हैं उसको पुंलिंग स्त्रीलिंग नपुंसकलिंग कहा जावै अथवा एकवचन द्विवचन बहुवचन कहा जावै उसको किसप्रकार से कहा जावै किसके मिलाने से उसके अर्थको जानसकैं उसको नीचे वा समाहार अथवा ऊंचे स्वरसे पढ़ना चाहिये कोई दूसराअक्षर ऐसाहै जिससे उसकी आदि में जोड़ने से दूसरा अर्थ प्रकटहो उसके शब्द में रूपान्तरहै उससे कौन वस्तु प्रकट होती है और वह किसवस्तु से प्रकट हुआ है उसकी मात्रा कितनी हैं सन्धि उसकी कितनी हैं शब्द उसके कितने हैं किस वस्तु से मिलाहै शरीर में उस के उच्चारण का स्थान कहांहै उसके शब्द रूप होनेकी क्या व्यवस्था है गुरु

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

उसको किसविधि से उपदेश करते हैं छंद उसका क्याहै और वर्ण उसका क्याहै और इस प्रणवका मंत्र कौनहै प्रत्येक कर्म्ममें उसके उच्चारणकी क्या २ संख्याहै उसका वर्णन कौन कथामें है ऋग्वेद उसके कौन अक्षरमें है और यजुर्वेद सामवेद उसके कौन २ अक्षर में है किस कारण से वेदपाठी उसका उच्चारण सबकर्म्मों की आदिमें करते हैं उसका देवता कौन है कर्म्मोंमें उसके उच्चारणका शुभमुहूर्त्त कौन है उसके शब्दोंका वर्णन कहांहै स्थान उसका कहां है वह कहां से प्रकटहुआ और शरीर में किसवस्तुसे सम्बन्ध रखताहै श्रीप्रजापति देवताने इन षट् प्रश्नों को तीन भागकर के प्रणवका वर्णन किया उसका मूल आपहै और कोई उसके मूलको ओ कहते हैं प्रथम अर्थमें सर्वब्यापी है दूसरे अर्थ में पालनेवाला

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

है और पालन गुणसे सर्वव्यापी गुण बड़ाहै नि-
दान आपसे औ हुआहै कारण यह जैसे ब्रह्मसर्व-
व्यापी है वह भी सर्वव्यापी है उसके उच्चारण
की विधि सूक्ष्मता और विस्तार दोनोंसे होतीहै
अर्थात् जो इस मन्त्रके एकअक्षर का उच्चारण
करें वही अर्थ निकलताहै और जो सबअक्षरों
को एकसाथकहे वहीअर्थ निकलताहै और जिस
अक्षरको उसमें मिलाते हैं वह अक्षर यद्यपि
बोलनेमें नहीं आता परन्तु अर्थ उसका प्रभाव
में प्रवेशित होजाताहै और त्रिलिङ्ग में उच्चारण
करने से उसमें विकार नहीं होता उसका दीर्घ
उच्चारण करते हैं उसको तीनों लिंग से सम्बन्ध
नहीं देसक्के उसको सर्व्व भी कहसक्के हैं और
वह उसके साथ उसके मध्य उसके अर्थ उसका
भाग उसको भी कहसक्के हैं अर्थात् कर्त्ता कर्म
करण संप्रदान अपादान अधिकरण आदि वही

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

है उसका संबंध सबके साथ समान है अ उ म के योग से ॐकार हुआ है मात्रा उसकी तीन हैं जो ऊपर लिखीगईं और चौथी मात्रा उस की अर्द्ध अनुस्वार है इस प्रकार साढ़े तीन मात्रा होतीहैं और शरीरमें उसका स्थान दोनों ओष्ठहैं और उच्चारणके दो स्थानहैं अर्थात् ॐ के उच्चारण में ग्रीवा खुलजाती है और मकार के उच्चारण में दोनों ओष्ठ मिलजाते हैं और इस मन्त्र के अक्षर अयोगी अक्षरहैं यौगिक नहीं हैं औ यहमन्त्र किसी अक्षरके मिलाने से दूसरा अर्थ प्रकट नहीं करताहै उसको उदात्त अनुदात्त स्वरित तीनोंस्वर से पढ़सक्ते हैं उस को एक वचन द्विवचन बहुवचन तीनों कह सक्तेहैं महर्षि इसको इस प्रकार उच्चारण करते थे और शिष्योंको उपदेश करतेथे कि शिष्यों को इन प्रश्नोंके करनेकी आवश्यकता नहीं होती

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

थी और सुनतेही समझजातेथे कि किसप्रकार उच्चारण करना चाहिये कान्यकुब्ज देशमें एक ब्रह्मज्ञानी था उसने ज्ञानियोंसे प्रश्न किया तब यह बात प्रकटहुई कि उस काल के ऋषियों से पूछा कि प्रणवके उच्चारणका ऐसा कौन प्रकार है कि उस प्रकारसे उच्चारणमें निन्दाहोय और वह कौनसी विधिहै जिसकी स्तुति ऋषि वेदके जाननेवाले करतेहैं और कहते हैं कि जिसप्रकार प्रणवका उच्चारण करना चाहिये उसी प्रकार किया जिस उच्चारणमें यह छः वस्तु वर्त्तमानहों अर्थात् अक्षरों का उच्चारण उनके स्थानों से १ कर्मों में उच्चारणकी विधि २ व्याकरणसे शुद्ध ३ शब्दोंके अर्थ जानना ४ छन्दोंको समझना ५ कालका ज्ञान ६ इन छओंके अनुसार जो उच्चारण प्रणव का करताहै उसकी स्तुति करतेहैं इस कारण से निश्चय जानो कि जबतक इन छओं

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

को न जानैगा प्रणव का ठीक उच्चारण न कर सकैगा प्रणवका छंद गायत्री है वर्ण उसका श्वेतहै देवता उसको एक शब्दवत् उच्चारण करतेहैं विधि उसकी उसका कर्म है दो भाग उत्तरहुआ एक भाग रहा वह यहहै चारोंवेदकी संहिता और चारों वेदके ब्राह्मणहैं येही चारों वेद कहलातेहैं इन चारों वेद के महान्मन्त्र चार हैं अर्थात् अथर्ववेद की आदिमें प्रणवहै और ऋग्वेदकी आदिमें भूःहै और यजुर्वेदकी आदि में भुवःहै और सामवेदकी आदिमें स्वःहै और प्रणवकी श्रेष्ठता यहहै कि जबतक इसको चारों वेद की आदि में न पढ़ें वेदों की शक्ति न्यून होजाती है अर्थात् वेद उच्चारण होनेसे फल देते हैं सो नहीं देते सतयुग त्रेता के पीछे तीसरे युग द्वापर में ऋषियों ने सोचा कि जो मनुष्य ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद को अच्छे

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रकार न जानें और यज्ञोंको करें तौ कर्मभ्रष्ट होगा और फल नहीं देगा और यज्ञ आप कर्म है तौ किस प्रकार कर्मका प्रचारहोगा इसको सोचकर भयभीतहुये कि पूर्वऋषियों ने इसमें कुछ नहीं कहा है कि जिससमय वेद फल न देवै क्या करना चाहिये हमको उचितहै सब इकट्ठे होकर अथर्वण ऋषिके पास जावैं और उनसे कहैं कि आप हम को सुख शान्ति देने-वाले हो इस विषयमें कुछ उपदेश कीजिये इसप्रकार निश्चय करके सोचा जो हम विनय-पूर्वक अथर्वण ऋषिके पास न जावैं तौ वे हम को कब उपदेश करेंगे अर्थात् न करेंगे, यह सोच और आश्रम में पहुँचकर विधिवत् पूज-नकरके अपने प्रश्नको कहा अथर्वण ऋषिने गुरुओंकी विधि से उत्तरादिया कि मेरे अथर्व वेदकी आदि में जो महामन्त्रहै उसको शिष्य

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लोग वेदों और कर्मों की आदि में उच्चारण करते हैं इसकारण से निष्फल नहीं होते जो तुमभी अपने वेदके कर्मों में अथर्ववेद जानने वालों को न बुलाओ तौ तुम्हारे कर्म निष्फल होंगे और कर्म करने करानेवाले दोनों भ्रष्ट होंगे और तुम्हारे मन्त्र फल नहीं देंगे चाहिये कि अपने पुत्र वा नातियों को यही सिखलाओ जो इसप्रकार किया तौ ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद निष्फल न होंगे ऋषियों ने कहा कि हमने इस बातको अङ्गीकार किया और वे सब ऋषि अभय अशोच और प्रसन्नहुये इसीकारण से सब वेदके जाननेवाले वेद और उनकेकर्म और ब्राह्मणों में अवश्य महामंत्र प्रणवका उच्चारण करते हैं जो ऋग्वेदकी आदि में प्रणवका उच्चारणकरैं तो देवता उसका अग्नि और प्रकाश उसका वही प्रणव और छन्द उसका गायत्री

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

और लोक उसका पृथिवीलोक को जानना चाहिये और प्रथम मन्त्र ऋग्वेद के साथ जो कि अग्नि की स्तुति में है आरम्भ करना चाहिये जो यजुर्वेद की आदि में प्रणवका उच्चारणकरैं देवता उसका वायु और प्रकाश उसका वही प्रणव और छन्द उसका त्रिष्टुप् और लोक उसका अंतरिक्षलोक जानना चाहिये और प्रथममंत्र यजुर्वेद के साथ जो कि इन्द्रकी स्तुतिमें है आरम्भ करना चाहिये और सामवेद की आदि में प्रणवका उच्चारण करैं तौ उसका देवता सूर्य और प्रकाश उसका वही प्रणव और छंद उसका जगती और लोक उसका स्वर्गलोक जानना चाहिये और प्रथम मंत्र सामवेद के साथ जो कि अग्नि के आवाहनमें है आरम्भ करना चाहिये और अथर्व वेदकी आदि में प्रणवका उच्चारण करैं तौ

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

देवता उसका चन्द्रमा और प्रकाश उसका वही प्रणव और छंद उसका सबछंद और लोक उसका आपलोक जानना चाहिये और प्रथम मंत्र अथर्ववेदके साथ जिसमें आपकी स्तुति है आरम्भ करना चाहिये और यह वह जलहै कि जिससे चर अचर जगत् उत्पन्न होताहै जाननाचाहिये कि जो कुछ है आप है और जो कुछहै अथर्ववेद है और इसकारण से आप और प्रणव एकहैं इसीकारण से व्यासऋषि ने कहा कि श्रावणी में अथर्ववेदके जाननेवाले से जबतक अथर्ववेद नियत कर्म को न सीखै तबतक किसी वेदको न पढ़े क्योंकि इसके विना कर्मफल नहीं देंग और जो कोई चाहै कि अपने वेदके कर्मोंको करै तो उसको उचितहै कि अथर्ववेदको पढ़े क्योंकि विना अथर्ववेद के फल न होगा सामवेदकी श्रेष्ठता इसकारणसे कि

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विषयोंका त्याग और योग से अपने पाठ करने वालेको फल देताहै और अथर्ववेद विना त्याग विषयोंके और योगके फल देताहै इस कारण से जो कोई अथर्ववेद को जानै वह तीनोंवेद को जानताहै क्योंकि तीनोंवेद अथर्ववेद के मध्य हैं यह वेदकीआज्ञाहै और जो तत्त्वकर्म अपनेकरने के योग्य अथर्ववेदमेंहै वह यहहै कि जीवात्माका अज्ञान जोकि द्वैततासे उसका रोग हुआहै उस की औषधी प्रणवहै जो कि अथर्ववेदकी आदि है और उस प्रणवका ध्यान यह फल देताहै कि शुद्धात्मा होजाता है उचित है कि अपने मन के ध्यान में जीवात्मा परमात्माको एककरै और सर्वकर्मोंको त्यागकर शुद्धात्मा होकर रहै और यह अहंब्रह्मास्मि की अवस्था है इस अवस्था में निश्चय द्वैतता शेष यही है क्योंकि जब दूसराहो तब आपको उससे भिन्न करनेके

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

लिये कहाजाता है कि मैं ब्रह्महूं इसलिये इस अवस्था को छोड़कर निर्विकल्प समाधि में स्थितहोवै अर्थात् अहंत्वंसे अलगहोकर आत्मा रूपहोरहै जो कोई इन प्रश्न उत्तरोंको अच्छे प्रकार निश्चयकरै वह सर्वज्ञ होवै और सम्पूर्ण प्रश्न उत्तरों का जाननेवाला होवै ॥

ॐ देवाहवै सचित्तगुप्तं स्वर्गलोक मायन्स्ते रुद्रं पृच्छन्को भवानिति सोऽब्रवीदहमप्येकः प्रथममासीद्वर्त्ताभिव भविष्यामि च नान्यः कश्चिन्मत्तो व्यतिरिक्त इति सोन्तरादन्तरं प्राविशत्सोच्युतंप्राविशत्सोहं नित्यानित्यौव्यक्ताव्यक्तौ ब्रह्माहं प्राञ्चः प्रत्यञ्चोऽहं दक्षिणांचमुदञ्चोहं मध्यश्चोर्ध्वश्चाहंदिशश्च प्रतिदिशश्चाहं

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

पुमानं पुमानहंस्त्रियश्चाहंसावित्र्यऽहं गा
यत्र्यहंत्रिष्टुप् जगत्यऽनुष्टुप् चाहं सत्योहं
गार्हपतिर्दक्षिणाग्निराहवनीयोहं गौरहं
गौर्य्यहं ऋगहं यजुरहं सामाहमथर्वाङ्गिर
सोहं ज्येष्ठोहं श्रेष्ठोहं नरोहं नारायणोह
मापोहं वरिष्ठोहं तेजोहं गुह्योहं हरिण्यो
हं अक्षरमहं प्रतीतोहं पुष्करमहं पवित्र
महमग्रंचबहिश्चपुरस्ताज्ज्योतिरित्यहम्मे
वसर्वैव्यामाम्मेवससर्वं समायोमांवेद सदे
वान् वेदस सर्व्वांनिश्च वेदानाङ्गानिब्रह्म
णैश्चगाङ्गोभी ब्राह्मणान् ब्राह्मणेन हवि
र्हविषा युरायुषासत्वेन सत्वं धर्म्मेण धर्म
तर्प्पयामि स्वेन तेजसा ततोहवेतेदेवाः
रुद्रम्पृच्छंस्ते देवाःरुद्रंरध्यायन्स्तेदेवाः

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ऊर्ध्वबाहवो रुद्रंस्तुवन्तियोवैरुद्रः सभ
गवांश्च ब्रह्मतस्मैवैनमोनमः योरुद्रःसभ
गवांश्चविष्णुस्तस्मैवैनमोनमः योवैरुद्रः
सभगवांश्च स्कन्दस्तस्मैवैनमोनमःयोवै
रुद्रः सभगवांश्च इन्द्रस्तस्मैवैनमोनमः
योवैरुद्रस्सभगवांश्चाग्निस्तस्मैवै नमोन
मःयोवैरुद्रस्सभगवांश्चवायुस्तस्मैवैनमो
नमःयोवैरुद्रस्सभगवांश्चसूर्य्यस्तस्मैवैन
मोनमः योवैरुद्रस्सभगवांश्च सोमस्तस्मै
नमोनमःयोवैरुद्रस्सभगवांश्च ग्रहस्तस्मै
वैनमोनमः योवैरुद्रस्सभगवांश्च प्रतिग्र
हस्तस्मैवैनमोनमः योवै रुद्रस्सभगवां
श्च भुवस्तस्मैवैनमोनमः योवैरुद्रस्सभग
वांश्च पृथिवीतस्मैवैनमोनमःयोवैरुद्रस्स

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भगवांश्चापस्तस्मैवै नमोनमः योवैरुद्र
स्सभगवांश्च तेजस्तस्मैवैनमोनमः योवै
रुद्रस्सभगवांश्च विश्वस्तस्मैवैनमोनमः
योवैरुद्रस्सभगवांश्चांतरिक्षस्तस्मै वैनमो
नमःयोवैरुद्रस्सभगवांश्चाकाशस्तस्मै वै
नमोनमः योवै रुद्रस्सभगवांश्चकालस्त
स्मैवैनमोनमः योवैरुद्रस्सभगवांश्च यम
स्तस्मैवैनमोनमः योवैरुद्रस्सभगवांश्च
चित्तगुप्तस्तस्मैवैनमोनमः योवैरुद्रस्सभ
गवांश्च मृत्युस्तस्मैवैनमोनमः योवै रुद्र
स्सभगवांश्चामृतस्तस्मैवैनमोनमः योवै
रुद्रस्सभगवांश्च नारायणस्तस्मैवैनमो
नमः योवै रुद्रस्सभगवांश्च शुक्लस्त
स्मैवैनमोनमःयोवैरुद्रस्सभगवांश्च कृष्ण

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

स्तस्मैवैनमोनमः योवैरुद्रस्सभगवांश्च
कृत्स्नस्तस्मैवैनमोनमः योवैरुद्रस्सभग
वांश्च कृत्स्नमस्तस्मैवैनमोनमः योवैरुद्र
स्सभगवांश्च सूक्ष्मस्तस्मैवैनमोनमः यो
वैरुद्रस्सभगवांश्च स्थूलस्तस्मैवै नमोन
मः योवै रुद्रस्सभगवांश्च सर्वंतस्मैवैन
मोनमः योवैरुद्रस्सभगवांश्चतत्त्वंतस्मैवै
नमोनमः योवै रुद्रस्सभगवांश्चसत्यंत
स्मैवैनमोनमः योवैरुद्रस्सभगवांश्चप्रण
वस्तस्मैवैनमोनमः योवै रुद्रस्सभगवां
श्चसोहंतस्मैवैनमोनमः भूस्स्वादिर्मध्यं
भुवस्तेस्वस्ते शीर्षं विश्वरूपोसिब्रह्मैकस्त्वं
द्वेधा त्रिधाबुद्धिस्त्वंशान्तिस्त्वंपुष्टिस्त्वंहुत्त
महुत्तमं दत्तमदत्तमंसर्व्वं विश्वमविश्वंकृत्त

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मकृत्तं परमपरंपारायणंचत्वं अपासौं मम ताऽभूमागनूमज्योतिरविदां विद्वान् किं न्यूनमस्मान् कृणवद्रातिकमूधूर्त्तिर्मृत्यंम र्त्यैरुयसौंसूर्य्यंसचित्तगुप्तं पुरुषस्तस्मात् सूक्ष्मः पुरुषः सर्वं जगत् द्वैतं वा एतद क्षरं प्राजापत्यं सौम्यं सौम्येन सूक्ष्मं सू क्ष्मेण वायव्यं वायव्येनाग्रसत्तस्मै महा ग्रासायवैनमः हृदयस्थाः देवतास्सर्वाहृ दि सचित्तगुप्तं प्राणान् प्रतिष्ठितः हृदय त्वमसि योनित्यं या सार्द्धमात्रपरस्तुसःत स्योत्तरशिरो दक्षिणोत्तरतः पादौ य उत्त रतः स ॐकारो य ॐकारः स प्रणवो यः प्रणवः स सर्व्वव्यापी यःसर्व्वव्यापीसौं नन्तोयोनतस्तारंयत्तारंतच्छुक्लं यच्छुक्लंत

त्सूक्ष्मं यत्सूक्ष्मं तद्वैद्युतं यद्वैद्युतं तत्परब्रह्म
सएको यएकःसरुद्रो योरुद्रःसईशानो य
ईशानः सभगवान् महेश्वरः अथ कस्मा
दुच्युत ॐकारो यस्मादुच्चार्य्यमाण एव
प्राण एवप्राणानूर्द्ध्वमुत्क्रामयति तस्माद
च्युतं ॐकारो अथ कस्मादुच्यते प्रणवो
यस्मादुच्चार्य्यमाण एव ऋग्यजुःसामाथ
र्वाङ्गिरससब्रह्मब्राह्मणेभ्यः नामयति प्र
णामयतिच तस्मादुच्यते सर्व्वव्यापी य
स्मादुच्चार्यमाण एव यथास्नेहेनपलल
पिण्डमिव शान्तिरूपमोतप्रोतमनुप्राप्तो
वितिष्ठश्चतस्मादुच्यतेऽनन्तोयस्मादुच्चा
र्य्यमाण एवतिर्य्यगूर्द्ध्वमधस्ताच्चास्या
न्तो नोपलभ्यतेऽथकस्मादुच्चनन्तोऽथक

स्मादुच्यतेतारं यस्मादुच्चार्यमाण एव
गर्भजन्मव्याधिजरामरणसंसारमहाभया
त्तारयति तार्य्यतेऽथ कस्मादुच्यते शुक्लं
यस्मात्कलियुगश्चकृष्णवर्णः आदिरन्त
स्समध्यानं चतुष्कालपरिवर्त्तते वर्णावर्णौ
चनामनामीयासार्द्धमात्रशुद्धस्वरूपं सर्वं
स्थितःएकोहदेवाः प्रदिशोनुसर्वाः पूर्वोह
जातःसउगर्भे अन्तःसएवजातः सजनि
ष्यमाणः प्रत्यङ्जनास्तिष्ठतिसर्व्वतोमु
खः एकोरुद्रो न द्वितीयाय तस्मै इमांलो
को निसत्तईशनीभिः प्रत्यङ्जनास्ति
ष्ठतिसंचकोचांतकालेसंसृज्यविश्वाभुवना
नि गोप्ता योयोनिंयोनिमाधितिष्ठते केनेदं
सचविरन्तिसर्वंतमीशानं वरदं दैवमग्जं न

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चाह्येमांशान्तिमत्यन्तिमेतिक्तमांच तृष्णा
हित्वा हेतुजालस्यमूलं बुद्ध्यासिंचित्ता
स्थापयित्वातुरुद्रेंरुद्रमेकत्वमाहूहशाश्वतं
वै पुराणमसि मूर्जेण पशवोनुनामयंतं मृ
त्युपाशान्तदेत्तेनात्मन्तेतेनात्मार्धचतस्त्र
मात्रेण शान्तिंससृजति पाशविमोक्षणाय
यासांप्रथमामात्राब्रह्मदेवत्यारक्तवर्णेनाका
रोभवति तमोगुणरूपस्याहंकारो जाग्रत
श्चैव प्रथमा भूमिकाश्चपदेभवति यस्तां
ध्यायतेनित्यंसगच्छेद्ब्राह्मणंपदंयासाद्वि
तीया मात्राविष्णुदेवत्या कृष्णवर्णेनोका
रो भवति रजोगुणरसश्चैव बुद्धिस्वप्नश्च
द्वितीयभूमिकाचपदेभवति यस्तांध्यायते
नित्यं सगच्छेद्वैष्णवंपदंयासातृतीयामा

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

त्रेशानदेवत्या कपिलवर्णेन बिन्दूनामका
रोभवति सम्पुटस्याम्यहं सतोगुणःचित्त
स्यगन्धं सुषुप्तिश्चैव तृतीयभूमिकाचप
दे भवति यस्तांध्यायतेनित्यं सगच्छे
दीशानंपदं यासार्द्धचतुर्थीमात्रा सर्व्वदे
वत्या व्यक्तिभूता खंविचरति शुद्धस्फटि
कसन्निभावर्णेनोद्ध्र्वरेफस्याह्लादो भवति
भवत्तव्यगुणं सर्वाधिकारश्च मनस्पर्शेत्त
स्मात् ब्रह्मचतुर्थी भूमिका च तुरीया भव
ति यस्तांध्यायतेनित्यं सगच्छेदप्यनाम
कंपदं पञ्चमेचाष्टं सचित्तगुप्तंमूर्द्धन्यश्च
समध्यात्ममध्यात्मनेसब्रह्मब्राह्मणेभ्यः त
देतदुपासीन्मुनयोवाग्वदतिनतस्यग्रहण
मयं यथाविहतिउत्तरेण येनदेवायान्ति ये

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नपितरो येनऋषयः परमपरं परायणंचे
ति वालाग्रमात्रं हृदयस्यमध्ये सचित्तगु
प्तं विश्वं देवजातं रूपं वरेण्यं तमात्मस्थं
येनपश्यन्ति धीरास्तेषां शान्तिर्भवति ने
तरेषां यस्मिन्क्रोधं याचतृष्णांक्षमांच
तृष्णाहित्वाहेतुजालस्यमूलं बुद्ध्वासि
चित्तंस्थापयित्वारुद्रे रुद्रमेकत्वमाहुह रु
द्रोहि शाश्वतेन वै पुराणेन एषमूर्जेण तप
सानियन्तां अग्निरिति भस्मवायुमिति
भस्मजलमिति भस्मस्थलमिति भस्मस
र्वंवाइदं भस्ममनएतानि चक्षूंषियस्मा
च्छ्रुतमिदं पाशुपतं पाशुपतं यद्भस्मना
ङ्गानि यं स्पर्शेत्तस्माद्ब्रह्म तदेतत्पाशुप
तपशुपाशविमोक्षणाय योऽसौ रुद्रोयो

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ऽप्स्वन्तर्य्यओषधीर्वीरुधआविवेश यइ
मांविश्वाभुवनानिचक्लृपेतस्मै रुद्रायनमो
ऽस्त्वग्नये योरुद्रोऽग्नौयोरुद्रोऽप्स्वन्तर्योरुद्र
ओषधीर्वीरुध आविवेशायोरुद्रइमाविश्वा
भुवनानि चक्लृपेतस्मैरुद्रायवैनमोनमःयो
रुद्रोऽप्सुयोरुद्र ओषधीषु योवनस्पतिषु
येन रुद्रेण जगदूर्ध्वंधारितं पृथिवीद्वेधा
त्रिधा धर्त्ताधारितानागायंतरिक्षेत्तस्मै रु
द्रायवैनमोनमः मूर्द्धानतस्य साशीव्याथ
र्वहृदयं चेतिमस्तिष्कादूर्ध्वां प्रेरयत्यवमा
नोधिशीर्षतः तद्वाआथर्वणः शिरोदेवको
शः समुष्ठितः मत्प्राणोऽभिरक्षति शिरो
ऽन्यमथो मनःनद्दिवो देवजनेनगुप्तःनवा
न्तरिक्षाणि नचभूमिः इमांयस्मिन्निदंसर्व

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मोतप्रोतं यस्मान्न एनं परिकिंचनास्ति
न तस्मात्पूर्वं न परं न भूतं नोद्भव्यं यदा
सीत्सहस्रपादेकमूर्ध्नाव्याप्तं सदाएवेद
मावरीवर्त्तिभूतःअक्षरंजायतेकालः काल
व्यापक उच्यते व्यापकोहि भगवान्रु
द्रो भोगायमानो यदाशेते रुद्रस्तदासंहा
र्यतेप्रजाः उच्छ्वसितेतमोभवति तमसा
आपोस्वांगुल्यामथितेमथितंशिशिरे शि
शिरमथ्यमानंफेनोभवतिफेनादंडं भवत्य
एडाद्ब्रह्माभवत्ब्रह्माणीवायुर्वायोरोङ्कार
ॐङ्कारात्सावित्री सावित्र्याश्च गायत्री
गायत्र्याश्चलोकाभवन्ति अर्चइति तपः
सत्यं मधुक्षरन्ति अध्रुवं एतद्वै परमं तप
आपोज्योतीरसोमृतं ब्रह्मभूर्भुवःस्वरोंन

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

म इति यइदं थर्वशिरो ब्राह्मणोधीयते श्रोत्रियः श्रोत्रियोभवत्यनुपनीत उपनीतोभवत् सोऽग्निपूतोभवत् सवायुपूतोभवत् ससूर्य्यपूतोभवत् ससोमपूतोभवत् स सत्यपूतोभवत् ससर्वैः पूतोभवत् ससर्वैर्वेदैर्ज्ञातोभवत् ससर्वैर्वेदैरनुध्यातोभवत् ससर्वैषुतीर्त्थैषुस्नातोभवत्तेन सर्वैःक्रतुरसम्भवति गायत्र्याःषष्ठी शास्त्राणिजप्तानि भवन्तीतिहासपुराणानांरुद्राणांसत्यशास्त्राणि जप्तानिभवन्तिप्रणवानांयुतंजप्तंभवत्याचसुखाः पङ्क्तिपुनात्याह सप्तमात्पुरुषयुगात्पुनानीत्याह सभगवान्थर्वशिरः सकृज्जप्त्वैव शुचिःपूतः कर्म्मणोभवति द्वितीयं जप्तःगणाधिपत्यंवाप्नोति तृतीयं जप्त्वैव

मेवानुप्रविशन्त्योसत्यसौं सत्यं सओंकारों इति अथयज्ञेमृन्मयमूर्तेः प्रतिष्ठापूजनप्रायश्चित्तादीनि उभयंवाऽएतत्प्रजापतिर्निरुक्तश्चानिरुक्तश्च परिमितश्चापरिमितश्च तद्यद्यजुषाकरोति यदेवास्य निरुक्तं परिमितछंरूपं तदस्यतेन संस्करोत्यथ यत्तूष्णीं यदेवास्यानिरुक्तमपरिमितछंरूपं तदस्य तेन संस्करोतीति ब्राह्मणंश ॥ का० १४ अ० १ ब्रा० २ मं० १८ ॥

परमेश्वर दो प्रकार का हैं निरुक्त १ अनिरुक्त २ परिमित १ अपरिमित २ इस कारण जो कर्म यजुमंत्र से करता है उसके द्वारा परमेश्वर के उस रूप का संस्कार करताहै जोकि निरुक्त और परिमित नाम है और जो तूष्णीं

भाव सम्पन्न है अर्थात् मंत्र में अध्यात्म अर्थ का ही मनन करता है उससे परमेश्वर के उस रूपका संस्कार करताहै जोकि अनिरुक्त और अपरिमित नाम है ॥

अथ कथं साकारो भवति तस्य प्रमाणम् मायायां विष्णोस्तेजः पपात तत्पतित्वा सावादित्योऽभवदथेतरः प्राङेवप्रावृज्यत तद्यद् घृङ्ङित्यपत तस्माद्धर्मोऽथयत्प्रावृज्यत तस्मात्प्रवर्ग्यइति ब्राह्मणं श० १४ । १ । १ । १० ॥

माया में विष्णुका तेज गिरा वह विराट्का आत्मा सूर्य हुआ धर्म्म और प्रवर्ग्य भी उस के दो नाम हुये ॥

मूर्तिनिर्माणविधिः ॥

यज्ञस्यशीर्षछिन्नस्य रसोव्यक्षरत्सइमे

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

द्यावापृथिवीऽअगच्छद्यन्मृदियं तद्यदा पोऽसौतन्मृदश्चापांच महावीराःकृताभव न्ति तस्मान्मूर्त्तिनिर्म्माणाय मृत्पिण्डं प रिगृह्णाति तेनैवैनमेतद्रसेन समर्द्धयति कृत्स्नं करोतीति ब्राह्मणम् ॥ १४ । १ । ३ । ८ । तस्य मन्त्रः ॥

वैष्णवी तेज माया में गिरा उससमय कुछ दीप्तिरूप रस पृथिवी स्वर्ग में व्याप्त हुआ जिस को जल और मिट्टी कहते हैं और इन्हीं दोनों वस्तुसे महावीरों की मूर्त्ति बनातेहैं इसकारण मूर्ति बनाने के लिये मृत्पिण्ड को लेता है मानों उस पूर्वोक्त ज्योतिरूप रससेही इसको समृद्धियुक्त और परिपूर्ण करता है॥

देवीद्यावा पृथिवी मखस्य वामद्यशिरो

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

राध्यासं देवयजने पृथिव्याः मखायत्वा मखस्यत्वाशीर्ष्णे यजु० अ० ३७ मं०३

हे (देवी) देव्यौ (द्यावापृथिवी) मृज्जले (अद्य) (पृथिव्याः) (देवयजने) देवयजनस्थाने (वाम्) युवां मृज्जले आदाय (मखस्य) (शिरः) महावीरस्य मूर्त्ति (राध्यासम्) साधयेयं (मखाय) यज्ञाय (त्वा) त्वांगृह्णामि (मखस्य) (शीर्ष्णे) महावीराय (त्वा) त्वां गृह्णामि ॥ ३ ॥

हे मृदजलरूप देवियो ! अब देवयजन स्थान में तुम दोनों को लेकर महावीरकी मूर्त्ति को साधन करूं मैं यज्ञके लिये तुम्हें लेताहूं और महावीर के लिये तुम्हें लेताहूं ३ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

एतावाऽएतदकुर्वत यथा यथैतद्यज्ञस्य शिरोऽछिद्यत तस्मान्मूर्त्तिनिर्म्माणाय तां वल्मीकवपां परिगृह्णाति ताभिरेवैवमेतद्रसेन समर्द्धयति कृत्स्नं करोति इति ब्राह्मणं श० १४ । १ । २ । १० तस्य मन्त्रः देव्यो वम्र्यो भूतस्य प्रथमजा मखस्य वोऽद्य शिरो राध्यासन्देवयजने पृथिव्याः मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे यजु० अ० ३७ मं० ४ हे (भूतस्य) प्राणिजातस्य (प्रथमजाः) प्रथमोत्पन्नाः (देव्यः) (वम्र्यः) उपजिह्विकाः (वः) युष्मानादाय (पृथिव्याः) (देवयजने) (मखस्य) (शिरः) महावीरं (अद्य) (राध्यासम्) सम्पादयेयं शेषं पूर्ववत् ॥ ४ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मायामें वैष्णवीतेज गिरनेका कारण (वल्मीक) (व पावमई) की (मिट्टी) हुई इस कारण उसको लेताहै और उससे महावीरकी मर्त्तिको सम्मृद्ध और परिपूर्ण करता है यह ब्राह्मण वाक्य हुआ इसके मंत्र का अर्थ यह है । हे प्राणियों से प्रथम उत्पन्न देवी उपजिह्वकाओ ! तुमको लेकर देवयजन स्थान में अब महावीर की मूर्तिको संपादन करूं मैं यज्ञके लिये तुम्हें लेताहूं महावीरके लिये तुम्हें लेता हूं ४ ॥

इयतीहवाऽइयमग्रे पृथिव्या सप्रादेश मात्रीताभेमूष इति वराहउज्जघानसोऽस्याः पतिःप्रजापतिस्तस्मान्मूर्त्तिनिर्म्माणाय वराहविहितंमृदंपरिगृह्णाति तेनैवैनमेतन्मिथुनेन प्रियेण धाम्ना समर्द्धयति कृत्स्नं करोतीति ब्राह्मणं श० १४ । १ ।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

२११ तस्यमन्त्रः इयत्यग्रेआसीन्मख
स्यतेऽद्याशिरोराध्यासं देवयजने पृथि
व्याः मखायत्वा मखस्यत्वा शीर्ष्णे ॥
यजु० अ० ३७ । मं० ५ (अग्रे) आदौ
वराहोद्धरणसमये पृथिवी (इयती) ए
तत्प्रमाणाप्रादेशमात्री (आसीत्) हेपृ
थिवि (अद्य) (ते) पृथिव्याः (देवय
जने) (मखस्य) (शिरः) (महावीरं)
(राध्यासम्) (मखाय) (त्वा) त्वां
गृह्णामि (मखस्य) (शीर्ष्णे) महावीराय
(त्वा) त्वां गृह्णामि ॥ ५ ॥

सृष्टिके आरम्भकाल में यह पृथिवी प्रादेश-
मात्री थी उसको श्रीवराहजी ने ऊंचाउठाया
वे वराहजी इस पृथिवी के पति और प्रजाके

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

स्वामी हैं इस कारण उन प्रियधाम मिथुनके द्वारा महावीर को समृद्ध और परिपूर्ण करता है यह ब्राह्मणवाक्य हुआ उसके मन्त्रका अर्थ यहहै आदिमें अर्थात् वराह अवतारके समय यह पृथिवी प्रादेशमात्री थीहे पृथिवि! अब तेरे देवयजन स्थानमें महावीर की मूर्त्तिको सम्पादन करूं हे वराहविहितमृत! यज्ञके लिये तुम्हें लेताहूं महावीर की मूर्ति के लिये तुम्हें लेताहूं ५

सुरभयः पतीकायज्ञस्यहिरसात्सम्भूतास्तस्मान्मूर्त्तिनिर्म्माणायताःपरिगृह्णातीतिब्राह्मणंश० १४।१।२।१२ तस्य मन्त्रः इन्द्रस्यौजस्थमखस्यवोऽद्यशिरोराध्यासंदेवयजने पृथिव्याः मखायत्वा मखस्यत्वा शीर्ष्णे यजु० अ० ३७ मन्त्र ६ हेपूतीका यूयं (इन्द्रस्य) परमेश्वरस्य

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(ओजः) तेजोरूपाः (स्थ) (वः) युष्मानादाय (पृथिव्याः) (देवयजने) (मखस्य) (शिरः) महावीरं (राध्यासम्) (मखाय) (त्वा) त्वांगृह्णामि (मखस्य) (शीर्ष्णे) महावीराय (त्वा) त्वांगृह्णामि ६ ॥

सुगन्धित पूतीका वैष्णव तेजसे उत्पन्न हुई इस कारण मूर्त्तिनिर्म्माणके लिये उनको लेताहैं यह ब्राह्मणवाक्य हुआ अब मन्त्रार्थ को कहते हैं—हेपूतीकाओ! तुम परमेश्वरके तेजरूपहो तुम को लेकर देवयजनस्थान में महावीर को सम्पादन करूं यज्ञकेलिये तुमको लेताहूं महावीर के लिये तुम्हें लेताहूं ६ ॥

यज्ञस्यशीर्षच्छिन्नस्य शुगुदक्रामत्ततोऽजासमभवत्तस्मादजाक्षीरंपरिगृह्णातित

यैवैनमेतच्छुचासमर्द्धयति कृत्स्नंकरोती तिब्राह्मणंश० १४।१।२तस्यमन्त्रः मखायत्वामखस्यत्वा शीर्ष्णे यजु० अ० ३७ मं० ७॥

जब वैष्णवी तेजमायामें गिरा तब उसकी दीप्ति से अजा उत्पन्नहुई इस कारण अजा के दुग्धको लेता है और उस दीप्ति से महावीरको समृद्ध और परिपूर्ण करताहै यह ब्राह्मणवाक्य है श० मन्त्रार्थ यहहै-हे अजाके दुग्धयज्ञ के लिये तुम्हें ग्रहण करताहूं और महावीर के लिये तुम्हें ग्रहण करताहूं ७॥

सर्वानिवास्माऽएतद्देवानभिगोप्तॄन्करोतीतिब्राह्मणं श० १४।१।२।१५ तस्यमन्त्रः ॥ पैतुब्रह्मणस्पतिः प्रदेव्येतुसु

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नृता अच्छा वीरन्नर्यम्पङ्क्तिराधसंदेवाय ज्ञन्नयन्तुनः यजु० अ० ३७ मं० ८ ॥ (ब्रह्मणस्पतिः) वेदस्यपालकः (अ) महानारायणः (अच्छ) अभिमुखं (प्रैतु) (सूनृतासत्यस्वरूपा (देवी) महालक्ष्मीः (प्रैतु) (देवाः) (नः) अस्माकं (न र्य्यम्) नरस्य परमेश्वरस्य मूर्त्तिरूपं (पंक्तिराधसं) इन्द्रियपंक्तिभिः समृद्धं (यज्ञ) यज्ञपुरुषं (वीरम्) महावीरं (नयन्तु) स्वकीयशक्तिं प्रापयन्तु ८ ॥

सब देवताओंको मूर्त्तिका रक्षक करताहै यह ब्राह्मणवाक्य है श० मन्त्रका अर्थ यह है- वेदकारक्षक महानारायण और सत्यस्वरूपा देवी लक्ष्मी ज्ञान दृष्टिका गोचरहोवें देवता हमारे

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

इष्टदेवकी मूर्त्तिरूप इन्द्रियपंक्तियोंसे समृद्ध यज्ञ पुरुषरूप महावीरको अपनी शक्ति प्राप्त कराओ ८ ॥

पय आदि सम्भारसमूहं गृह्णाति तस्यमन्त्रः मखायत्वा मखस्यत्वा शीर्ष्णे यजु० अ० ३७ मं० ८ ॥

दुग्धआदि सम्भार समूहको ग्रहण करताहै उसके मन्त्रका अर्थ स्पष्टहै ॥

अथ मृत्पिण्डमुपादायत्रीन्महावीरान्करोतिप्रादेशमात्रं मध्येसंगृहीतमथास्योपरिष्टात्त्र्यंगुलं मुखमुन्नयतिनासिकामेवास्मिन्नेतद्दधातीतिब्राह्मणंश० १४। १।२।१७ तस्यमन्त्रःमखायत्वामखस्यत्वा शीर्ष्णे यजु अ० ३७। मं० ८ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मृत्पिण्डको लेकर महावीरकी तीन मूर्त्ति बनाता है जो कि प्रादेशमात्र और मध्यमें संग्रहीतहों फिर मुख और नासिकाको उसमें धारण करता है यह ब्राह्मण वाक्यहुआ श० अब मन्त्रको कहते हैं हे मूर्तियो ! यज्ञके लिये तुमको निर्माण करताहूं महावीरके लिये तुमको बनाताहूं ८ ॥

यज्ञस्य शीर्षछिन्नस्य रसोव्यद्रवत्तत एताओषधयो जज्ञिरेताः परिगृह्णातिते नैवैनमेतद्रसेन समर्द्धयतिकृत्स्नंकरोती तिब्रा ह्मणंश० १४ । १ । २ । १९ तस्य मन्त्रःमखायत्वा मखस्यत्वा शीर्ष्णे ८ ॥

जब वैष्णवी तेजमायामें गिरा तब कुछ रस रूपतेज फैला उससे ओषधियां उत्पन्न हुईं उनको ग्रहण करताहै और उसी रससे महावीर

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

की समृद्ध और परिपूर्ण करता है यह ब्राह्मण वाक्य हुआ श०अबमंत्रार्थको कहतेहैं हे ओषधे! यज्ञकेलिये तुम्हें ग्रहण करताहूं महावीर के लिये तुम्हें ग्रहण करताहूं ८ ॥

अश्वस्यत्वावृष्णः शक्ना धूपयामि देव यजने पृथिव्याः ९ हे महावीर (पृथिव्याः) (देवयजने) (वृष्णः) धर्मार्थ काममोक्षैः सेक्तुः (अश्वस्य) महानारायणस्य असौवाआदित्य एषोऽश्वः श० ६ । ३ । १ । २९ । सूर्योवै सर्वे देवाः श० १३ । ७ । १ । ५ (शक्ना) भोगोच्छिष्टेन यथाहाथर्वः शर्कराः सिकता अश्मान ओषधयोवीरुधस्तृणा अभ्राणि विद्युतो वर्षमुच्छिष्टेसंश्रितािश्रितायच्च प्रा-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

णति प्राणेन यच्च पश्यति चक्षुषा उच्छि ष्टाज्जज्ञिरे सर्वे दिवि देवादि विश्रितः ११। ७ (त्वा) त्वां (धूपयामि) ६ ॥

महावीरों को धूप देताहै यह ब्राह्मण वाक्य-हुआ १४ । १ । २ । २० अब मन्त्रार्थ को कहते हैं-हे महावीर देवयजन स्थान में चारों पदार्थ के दाता महानारायण के उच्छिष्ट से तुम्हें धूपदेताहूं अथर्ववेद ११ । ७ । में लिखा है किं शर्करा बालू पाषाण ओषधि तृणबादल बिजलीवर्षा ये सब उच्छिष्टमें आश्रित हैं जो श्वास लेताहै जो नेत्रसे देखता है और जो स्वर्गवासी देवता हैं वे सब उच्छिष्ट से उत्पन्न हुये हैं इत्यादि बहुत मंत्रहैं ६ ॥

अथैनाञ्छ्रपयतीति ब्राह्मणं श० १४।

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

१।२।२१ तस्यमन्त्रः मखायत्वा मख स्यत्वा शीर्ष्णे ६ ॥

फिर इनमहावीरों की मूर्त्तिको अग्नि में पक्क करता है यह ब्राह्मण वाक्यहुआ श० अब मन्त्रार्त्थको कहते हैं—हे मूर्त्ते ! तुम्हें यज्ञके लिये पकाताहूं महावीर के लिये तुम्हें पकाताहूं ६ ॥

उद्वपतीति ब्राह्मणं श० १४।१।२। २२ तस्यमन्त्रः ऋजवेत्वा साधवेत्वा सुक्षित्यैत्वा १० पदार्थः (ऋजवे) स्वर्गाय सूर्याय (त्वा) त्वामुद्वपामि (साधवे) वायवे अन्तरिक्षलोकायच (त्वा) त्वा-मुद्वपामि (सुक्षित्यै) पृथिवीलोकायाग्नयेच (त्वा) त्वामुद्वपामि त्रैलोक्यप्राप्तये त्वामुद्वपामि इत्यर्थः १०

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

फिर मूर्त्तियों को अग्निमें से निकालता है यह ब्राह्मणवाक्यहुआ श० अब मंत्रार्थ को कहते हैं-हे मूर्ते! स्वर्ग और सूर्य के लिये तुम्हें निकालताहूं वायु और अंतरिक्षके लिये तुम्हें निकालताहूं पृथिवी और अग्नि के लिये तुम्हें निकालताहूं १० ॥

अथैनानाच्छृणत्ति अजायै पयसेति ब्राह्मणंश० १४।१।२।२५ तस्यमन्त्रः मखायत्वा मखस्यत्वा शीर्ष्णे १० ॥

फिर महावीरकी मूर्तियोंको अजाके दुग्धसे सींचता है यह ब्राह्मणवाक्य हुआ श० अब मंत्रार्थको कहतेहैं-हे मूर्त्ते! यज्ञकेलिये तुम्हें सींचताहूं महावीर के लिये तुम्हें सींचताहूं १० ॥

प्रोक्षतीति ब्राह्मणं श० १४।१।३।४ तस्यमन्त्रः यमायत्वा मखायत्वा सूर्य्य

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

स्यत्वा तपसे ११ पदार्थः (यमाय) य म यति नियच्छति सर्वमितियमः सूर्यस्तस्मै (त्वा) त्वांप्रोक्षामि (मखाय) सर्व्वे प्रेरकमहानारायणस्य (तपसे) सूर्याय (त्वा) त्वांप्रोक्षामि ११ ॥

प्रोक्षण करता है यह ब्राह्मण वाक्य हुआ श० अब उसके मंत्रार्थको कहते हैं-हे मूर्त्ते! सूर्य के लिये तुम्हें प्रोक्षण करताहूं यज्ञ पुरुष विष्णु के लिये तुम्हें प्रोक्षण करताहूं सब के प्रेरक महानारायण के तपरूप सूर्य के लिये तुम्हें प्रोक्षण करताहूं ११ ॥

महावीर माज्येन समनक्तीति ब्राह्मणं श० १४ । १ । ३ । १३ । तस्यमन्त्रः॥ देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु ११ पदार्थः

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(सविता) (देवः) (मध्वा) मधुना मधुरेणसर्वजगद्रूपेणाज्येन (त्वा) त्वां (अनक्तु) लिम्पतु ११॥

महावीरको घृतसे लिप्त करताहूं यह ब्राह्मण वाक्य हुआ श० अब मंत्रार्थ को कहते हैं-हे महावीर! सविता देवता तुम्हें घृत से लिप्त करताहूं १२॥

मूर्त्तिव्यापकं परमेश्वरं स्तौति तस्य मन्त्रः अर्चिरसि शोचिरसि तपोऽसि यजु० अ० ३७। मं० ११ पदार्थः हे महावीरत्वं (अर्चिः) ब्रह्मतेजोरूपः (असि) (शोचिः) महानारायणतेजो रूपः (असि) (तपः) सूर्य्यतापरूपः (असि) ११॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मूर्त्ति व्यापक परमेश्वरकी स्तुति करता है उसका मंत्र हे महावीर ! तुम ब्रह्म तेजरूपहौ महानारायणके तेजरूपहौ सूर्य्यतापरूपहौ १३॥

प्राणानेवास्मिन्नेतद्दधातीति ब्राह्मणं श० १४। १। ३। ३०। तस्यमन्त्रः मधुमधुमधुमं। १३ यजु० अ० ३७ पदार्थः हे (मधु) प्राण हे (मधु) उदान हे (मधु) व्यान यूयमात्माग्निवीजयतेति ब्राह्मणम् १४। १। ३। २६॥

मूर्ति में प्राणों को स्थापन करताहै यह ब्राह्मण वाक्यहुआ अब मंत्रार्थको कहतेहैं–हे प्राण ! हे उदान ! हे व्यान ! तुम आत्माग्निको प्रज्वलित करो श० ॥

यज्ञस्य शीर्षच्छिन्नस्य शिरएतद्देवाः

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रत्यदधुर्य्यंदातिथ्यं न हवाऽअस्यापशी र्ष्णा केनचनयज्ञेनेष्टं भवति य एवमेतद्वेदश० १४।२।२।४६॥

जो वैष्णवी तेजमाया में गिरा विद्वानों ने फिर उसको विष्णु में युक्तकिया वही आतिथ्य है यदि बिना युक्त करने तेजके यज्ञकरे तौ उसमें सिद्धि नहीं होसक्ती जो इसको जानताहै वही सिद्धिको पाताहै श० ॥

यज्ञस्य शीर्षच्छिन्नस्य शुगुदक्रामत्सेमां लोकानाविशत्तमै वै नमेतच्छुचा समर्द्धयति कृत्स्नं करोतीति ब्राह्मणं श० १४।३।१।२। तस्यमन्त्रः याते घर्म्मदिव्या शुग्या गायत्र्याः छं हविर्द्धाने सात आप्यायतां निष्ठ्यायतान्तस्यैते स्वाहा

याते घर्मान्तरिक्षे शुग्यात्रिष्टुभग्नीध्रेसात आप्यायतान्निष्ठ्यायतांतस्यै ते स्वाहा यातेघर्म पृथिव्यां शुग्याजगत्याछ्ंसद स्या सात आप्यायतान्निष्ठ्या यतान्तस्यै ते स्वाहा यजु० अ० ३८ मन्त्र १८ ॥

पदार्थः हे (घर्म्म) महावीर (या) (ते) तव (शुक्) दीप्तिः (दिव्या) दिविभवा (या) (गायत्र्याछ्ं) समष्टिप्राणे प्राणोगायत्री श० १३ । ५ । १५ । (हविर्द्धाने) समष्टिस्थूलशरीरे (सा) (ते) (आप्यायतां) वर्धतां (निष्ठ्यायतां) दृढ़ाभवतु (ते) (तस्यै) (दीप्तये) (स्वाहा) हे (घर्म्म) महावीर (या) (ते) (शुक्) दीप्तिः

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(अन्तरिक्षे) (या) (त्रिष्टुभि) आत्मनि आत्मावैत्रिष्टुप् श० ६।४।२। ६। (आग्नीध्रे) हार्दान्तरिक्षे (सा) (ते) (आप्यायतां) (निष्ट्यायतां) (ते) (तस्यै) दीप्तये (स्वाहा) हे (घर्म) (महावीर) (या) (ते) (सदस्या) समष्ट्युदरे स्थिता उदरमेवास्यसदः० श० ३।५।३।५। (शुक्) दीप्तिः (पृथिव्यां) (या) (जगत्यां) (समष्ट्यपाने) योयमवाङ्प्राण एषजगती श० १०।३।१।१ (साते) (आप्यायतां) (निष्ट्यायतां) (ते) (तस्यै) दीप्तये (स्वाहा) १८॥

जब वैष्णवीतेज मायामें गिरा तब उसकी

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

दीप्ति इनलोकों में प्रवेशहुई उस दीप्ति से इस महावीरको समृद्ध और परिपूर्ण करताहै यह ब्राह्मण वाक्यहुआ श० अब मंत्रार्थ को कहते हैं हे महावीर! जो तेरी दिव्य दीप्ति विराट् शरीर में है और समष्टि प्राणमें है वह तुममें वृद्धि पावे अचलहो उस दीप्ति के लिये आहुति दीजाती है—हे महावीर! जो तेरी दीप्ति अन्तरिक्ष हार्दान्तरिक्ष और आत्मा में है वह तुममें वृद्धि पावो अचलहो उसतेरी दीप्ति के लिये आहुति दीजाती है हे महावीर! जो तेरी दीप्ति समष्टि उदर पृथिवी और समष्टि अपानमें है वह तुम्ह में वृद्धिपावो अचल हो उसतेरी दीप्ति को आहुतिदीजाती है १८ ॥

सउप हव मिष्ट्वा भक्षयतीति ब्राह्मणं श० १४।३।१।३१ तस्यमन्त्रः म

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

यित्यदिन्द्रियम् वृहन्मयि दक्षो मयिक्रतुः घर्मास्त्रिशुग्विराजति विराजा ज्योतिषा सह ब्रह्मणा तेजसा सह २७ यजु० अ० ३८ पदार्थः (त्रिशुक्) (त्रिदीप्तियुक्तः) (धर्मः) मूर्त्तिमयोदेवः (विराजा) (ज्योतिषा) (सह) तथा (ब्रह्मणा) (ज्योतिषा) (सह) (मयि) ममहृदये (विराजति) (तत्) तस्मात् (य) समष्टिप्राणः (वृहत्) महत् (इन्द्रियं) बलं (मयि) अस्ति (क्रतुः) संकल्पः (दक्ष) संकल्पसिद्धिः (मयि) वर्त्तते २७

होम करके उपहव को भक्षण करता है यह ब्राह्मण वाक्य हुआ श० अब मंत्रार्थ को कहते हैं तीनोंदीप्ति से युक्तिमूर्त्ति मयदेवता विराट्की

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ज्योति ब्रह्मकी ज्योति के साथयुक्त होकर मेरे हृदय में विराज मानहै उस कारण समष्टि प्राण और महान् बल मुझमें है संकल्प और संकल्प सिद्धि मुझमें वर्त्तमान है २७ ॥

यस्यघर्म्मो विदीर्य्यते तत्रप्रायश्चित्तिः श० १४ । ३ । २ । १ आहुतिभिर्भिष ज्यति यत्किञ्च विवृढं यज्ञस्येति ब्राह्मणं श० १४ । ३ । २ । २ तस्यमंत्रः स्वाहा प्राणेभ्यः साधिपतिकेभ्यः पृथिव्यैस्वाहा अग्नयेस्वाहा अन्तरिक्षायस्वाहा वायवे स्वाहा दिवेस्वाहा सूर्य्यायस्वाहा दिग्भ्यः स्वाहा चन्द्रायस्वाहा नाभ्यैस्वाहा पूता यस्वाहा १ । २ यजुः० अ० ३९ ॥

जिस यज्ञमें महावीरकी मूर्त्ति फटजावे उसके

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रायश्चित्त को कहते हैं श० आहुतिओं से चिकित्सा करता है जो कुछ मूर्तिका अंग भंग हुआ यह ब्राह्मणवाक्य है श० अब मंत्रार्थको कहते हैं सूर्य्य दिशा चन्द्रमा नक्षत्र जल वरुण नाभि और पूतके लिये स्वाहा ॥

मुखमेवास्मिन्नेतद्दधातीति ब्राह्मणं श० १४।३।२।१७ तस्यमंत्रः वाचे स्वाहा यजु० अ० ३९ मं० ३ नासिके ऽएवास्मिन्नेतद्दधातीति ब्राह्मणं श० १७ तस्यमंत्रौ प्राणायस्वाहा ३ प्राणायस्वाहा ३ अक्षिणीऽएवास्मिन्नेतद्दधातीति ब्राह्मणं श० १७ तस्यमंत्रौ चक्षुषेस्वाहा ३ चक्षुषेस्वाहा ३ कर्णावे वास्मिन्नेतद्दधा

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

तीति ब्राह्मणं श० १७ तस्यमंत्रौ श्रोत्रायस्वाहा ३ श्रोत्रायस्वाहा ३ ॥

मूर्त्ति में मुखको धारण करता है यह ब्राह्मण वाक्यहुआ श० मंत्रार्थ यह है वागाभिमानिनी देवी के लिये होमहो यजु० घ्राणेन्द्रियको मूर्त्ति में धारणाकरताहै यह ब्राह्मण वाक्य हुआ श० मंत्रार्थ यह है प्राणके लिये होमहो ३ प्राणके लिये होमहो ३ मूर्त्तिमें चक्षुइन्द्रियको स्थापन करताहै श० मंत्रार्त्थ यह है चक्षुके लिये होमहो ३ चक्षुके लिये होमहो ३ मूर्त्तिमें श्रोत्र इन्द्रियों को स्थापन करताहै श० मंत्रार्थ यह है श्रोत्रके लिये होमहो ३ श्रोत्रके लिये होमहो ३ ॥

मनसा वाऽइदꣳ सर्वमाप्तं तन्मनसैवै तद्भिषज्यति यत्किञ्चि विरुढं यज्ञस्येति ब्राह्मणंश०।१४।३।२।१६ तस्यमन्त्रः ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मनसःकाममाकूतिं वाचस्सत्य मशीयपशू नाꣳ रूपमन्नस्यरसोयशः श्रीःश्रयताम्म यिस्वाहा ४ यजु० अ० ३९ पदार्थः अहं (मनसा) (कामम्) अभिलाषम् (आकूतिम्) आकुञ्चनम् प्रयत्नम् (अशीय)प्राप्नुयाम्(वाचः)(सत्यम्)प्राप्नु याम् (पशूनाम्) इन्द्रियाणां (रूपम्) गोलकं यद्वापशूनां शोभा (अन्नस्य) (रसः) स्वादुत्वं (यशः) कीर्त्तिः (श्रीः) लक्ष्मीश्च (मयि) (श्रयताम्) तिष्ठतु (स्वाहा) ४

यह सब मनसे प्राप्तहोता है उसकारण मनके द्वाराही चिकित्सा करताहै जो कुछ यज्ञका अंग भंगहुआ यह ब्राह्मण वाक्य है श० मंत्रार्थ यह

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

है मैं मनके द्वारा अभिलाष और प्रयत्नको प्राप्त-
करूं वचनकी सत्यताको प्राप्तकरूं इन्द्रियों के
गोलक वा पशुओं की शोभा अन्नका स्वादुत्व
कीर्त्ति और लक्ष्मी मुझमें वासकरो इसके लिये
होमहो ४ ॥

कस्मादेतं मृन्मयेनैवजुहोतीतिब्राह्मणं
श० १४।२।२।५३। उत्तरं यज्ञस्यशी
र्षच्छिन्नस्य रसोव्यक्षरत्सइमेद्यावापृथिवी
ऽगच्छद्यन्मृदि यंतद्यदापोऽसौतन्मृदश्चा
पांचमहीवीराःकृता भवंति सयद्दानस्पत्यः
स्यात्प्रदह्येत यद्धिरण्मयः स्यात्प्रलीयेत
यल्लोहमयः स्यात्प्रसिच्येत यदयस्मयः
स्यात्प्रदहेत्परीशासावथेष एवैतस्माऽप्र
तिष्ठततस्मादेतंमृन्मयेनैव जुहोतीति

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ब्राह्मणं श० १४ । २ । २ । ५४ ॥

किसकारण मृन्मय मूर्त्तिही बनाकर होम करते हैं यह ब्राह्मण में प्रश्न है श० उत्तरम् । जब वैष्णवी तेजमाया में गिरा तब दीप्तिरूप रस पृथिवी स्वर्ग में प्रवेशहुआ जो कि मिट्टी जल रूप है इसी कारण मिट्टी जल से महावीरों की मूर्ति बनाते हैं यदि मूर्ति काष्ठकी हो अग्निमें जल जाय सुवर्णकी होय पिघलजाय पाषाणकीहोय फटजाय लोहेकी होय तो परीशासों को भस्मकरदे इसीकारण मृन्मयमूर्त्तिही बनाते हैं क्योंकि उसका अग्निमें रखना एक यज्ञ विधिहै इसीलिये मृन्मय मूर्त्ति बनाकर होम करते हैं श० ५ ॥

नमःकपर्दिनेचव्युप्तकेशायचनमःसहस्राक्षायचशतधन्वनेच नमोगिरिशयाय

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

च शिपिविष्टायच नमो मीढुष्टमायचेषु मतेच ७ ॥ (कपर्दिने) जटाजूट धराय (च) (व्युप्तकेशाय) मुण्डितकेशाय (नमः) (च) सहस्राक्षाय (च) (शतधन्वने) बहुधनुर्धारिणे (नमः) (च) (गिरिशयाय) कैलासेशेतेतस्मै (च) (शिपिविष्टाय) विष्णुरूपाय (नमः) (च) (मीढुष्टमाय) धर्मार्थकाममोक्षैःसेक्त्रे (च) (इषुमते) बाणधारिणे (नमः) ७॥

जटाजूटधारी मुंडित केशके लिये नमस्कार सहस्राक्ष और बहु धनुषधारी के लिये नमस्कार कैलासवासी और विष्णुरूपके लिये नमस्कार धर्मार्थ काम मोक्षसे सींचनेवाले बाणधारीको नमस्कार ७ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

प्रतद्विष्णुःस्तुवतेवीर्येण मृगोनभीमः कुचरोगिरिष्ठाः यस्योरुषुत्रिषुविक्रमणेषु अधिक्षियंतिभुवनानिविश्वा ८ ऋ० मं० १ अ० २१ सू० १५४ (तत्) (मृगः) नृसिंहवराहरूपाभ्यांमृगः (न) च (भीमः) रामकृष्णपरशुरामकल्किरूपैरसुराणां भयङ्करः (कुचरः) (क) जलं (उ) एवसञ्चारस्थानं यस्यसकुचरः कच्छप मीनरूपः (गिरिष्ठाः) वामनरूपेण वेद वाचिस्थितः (विष्णुः) (वीर्येण) (प्र स्तुवते) (यस्य) वामनरूपस्य (त्रिषु) (उरुषु) (विक्रमणेषु) पादप्रक्षेपेषु (विश्वा) सर्वाणि (भुवनानि) (अधिक्षियन्ति) निवसन्ति ८ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

वह नृसिंहवराह रूप से मृगरूप और रामकृष्ण परशुराम कल्किरूपों से असुरा के भयदाता कच्छप मीनरूप से जलचारी वामन रूपसे वेदवाणी में स्थित विष्णुजी अपने पराक्रमसे स्तुति कियेजाते हैं जिस वामन रूपके तीन बड़े पादप्रक्षेपों में सब भुवन निवास करते हैं ८ ॥

दशानामेकं कपिलं समानन्तं हिन्वन्तिक्रतवेपार्यायगर्भ्भ मातासुधितंवक्षणास्ववेनंतंतुषयन्तीबिभर्त्ति ॥ ९ ॥ (तं) (दशानां) दशावताराणां (समानं) (एकं) अद्वैतं (कपिलं) कपिलावतारं (पार्याय) परिसमापयितव्याय (क्रतवे) ब्रह्मयज्ञाय (हिन्वन्ति) प्रादुर्भावायप्रे

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

रयन्ति (माता) (वक्षणासु) नदीरूप नाडीनांमध्ये (सुधितं) प्रजापतिना स्थापितं (अवेनन्तं) निवासमकामयमानं (गर्भं) प्रजापतेर्गर्भं (तुषयन्ती) सम्यग्ज्ञानादुपदेष्टं योग्योऽयमितिप्रीता सती (बिभर्त्ति) धारयति ॥ ६ ॥

दशावतारों के समान अद्वैत कपिलजीको परिसमाप्ति योग्य ब्रह्मयज्ञके लिये प्रेरणा करते हैं और माताजी प्रजापतिद्वारा गर्भ में स्थापित निवासन चाहते गर्भ को अपना उपदेशक जानकर प्रसन्नहोती धारण करती है ६ ॥

आपिबत् कद्रुवः सुतमिन्द्रः सहस्रबाह्वे यत्राददिष्टपौंस्यम् १० (इन्द्रः) परमेश्वरोविष्णुः इदिपरमैश्वर्ये (सहस्र

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

बाह्वे) सहस्रबाह्वाख्यनृपपतये (कद्रुवः) (क) कामः (द्रूः) गच्छत्यूर्ध्वंवृत्तः कामवृत्तरूपदेहाद् द्रुगतौ (सुतं) अभिषुतंक्रोधं (अपिबत्) मनसिधारयामास (तत्र) तस्मिन्काले (पौंस्यम्) वैष्णवंवीर्यं (आददिष्ट) आदीप्यत १० ॥

परशुरामरूप परमेश्वर ने सहस्रबाहु के लिये क्रोधको धारण किया उस समय उनका पराक्रम प्रदीप्त हुआ १० ॥

भद्रो भद्रया सचमान आगात् स्वसारञ्जारो अभ्यति पश्चात् । सुप्रकेतैर्द्युभिरग्निर्वितिष्ठन्नुशद्भिर्वर्णैरभिराममस्थात् ॥ १० ॥ यदा (भद्रः) भजनीयः श्रीरामः (भद्रया) भजनीयया श्रीसीतया (स

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

चमानः) सहितः (आगात्) आगच्छ
ति देहे प्रादुर्भवति तदा (जारः) राव
णः (स्वसारं) ऋषीणांरुधिरेणोत्पन्नत्वा
द्भगिनीतुल्यां सीतां (अभ्येति) अभि
गच्छति (पश्चात्) अन्तकाले (अग्निः)
क्रोधेन प्रज्वलितोरावणः (अभितिष्ठन्)
युद्धेश्रीरामस्यसन्मुखेतिष्ठन्सन् (सुप्रके
तैः) सुप्रज्ञानैः (उशद्भिः) श्वेतैः (वर्णैः)
(द्युभिः) कुम्भकर्णादीनांजीवात्मभिः
सहःरामम् श्रीरामरूपंविष्णुं (अस्थात्)
(विष्णोः) सामीप्यतां प्राप्तवान् १० ॥

भद्र (राम) भद्रासीताजी के साथ प्रकटहुये
तब जार (रावण) ने ऋषियों के रुधिर से
उत्पन्न होने के कारण अपनी भगिनी सीताको

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हरणकिया पीछेअन्तकाल पर क्रोधसे प्रज्वलित रावणने सम्मुखहोकर कुम्भकर्ण आदिक शुद्ध ज्ञानी जीवात्माओं के साथ श्रीरामकीसामीप्यताको पाया क०सामवेदे उत्तरार्चिके १५ अ०२ ख०१ सू० ३॥

कृष्णां यदेनीमभिवर्प्पसाभूज्जनजन्योषांबृहतः पितुर्ज्जाम्। ऊर्द्धम्भानुष्ठं सूर्य्यस्यस्तभायन्दिवो वसुभिरातिर्व्विभाति १२॥ (यद्) यदा (बृहतः) (पितुः) महानारायणस्य (योषाम्) महामायां (जनयन्) नन्दगृहे प्रादुर्भूतांकुर्वन् (जाम्) जायमानां (एनीम्) गमनशीलां (कृष्णां) कृष्णवर्णदेहरूपां प्रकृतिं (वर्प्पसा) आत्मीयेन तेजसा (अभिभूत्) अभि

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

भवति व्याप्नोतितदा (दिवः) (सूर्यस्य) मानससूर्यस्य (भानुम्) आत्मानं (ऊर्ध्वम्)स्तभायन् योगनिष्ठःसन् (वसुभिः) (अरतिः) धन देहाभिमानरहितः सन् (विभाति) विविधंभातिभक्तानामुपर्यनुग्रहदृष्ट्याविभातिशत्रूञ्चदहति ॥

जब ब्रह्म महानारायण की योशा महामाया को नन्दगृहमें प्रकट करते हुए जायमान गमनशील कृष्णवर्णदेहरूपा मायाको अपने तेजसे व्याप्त करता है तब मानससूर्य के आत्माको ऊंचा स्थितकरते अर्थात् योगनिष्ठ होते धनदेहाभिमानसे रहितहोते श्रीकृष्ण नानाविधिसे प्रकाश करते हैं अर्थात् भक्तोंपर अनुग्रहदृष्टि से और शत्रुओंपर क्रोध दृष्टि से ॥

प्रकाव्यमुशने व ब्रुवाणो देवो देवाना

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ज्जनिमाविवक्ति महिव्रतः शुचि बन्धुःपाव
कः पदावराहो अभ्येति रेभन् १३ (उ
शना) शुक्रः (इव) (काव्यं) स्तोत्रं
(ब्रुवाणः) उच्चारयन् (देवः) वेदाभि
मानी देवः (देवानां) अवताराणां (ज
निमा) जन्मानि (प्रविवक्ति) प्रकर्षेण
ब्रवीति (महिव्रतः) पृथिव्या धारकः वृ
भृतौ (शुचिबन्धुः) दीप्तितेजस्कः (पाव
कः) पापानांशोधकः (वराहः) श्रीवा
राहावतारः (रेभन्) शब्दंकुर्वन् (पदा)
पादेन (अभ्येति) देवानां समीपेगच्छ
ति १३॥

शुक्र की समान स्तोत्रको उच्चारण करता
वेदाभिमानी देवता अवतारोंके जन्मोंको कहता

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

हे पृथिवी धारण करनेवाले दीप्ति तेज पापों से शुद्ध करनेवाले श्री वाराहजी शब्द करते हुये देवताओं के समीप जाते हैं ॥

सयोजयत उरुगायस्य जूतिंवृथा क्रीडन्तम्मिमतेन गावः परीणसङ्कृणुते तिग्मश्टङ्गोदिवा हरिर्ददृशेनक्तमृज्रः १४
(सः) वाराहावतारः (उरुगायस्य) बहुभिःस्तुतस्य विष्णोः (जूतिं) गतिं (योजयते) स्वकीये देहे युनक्ति (वृथा) मायारूपेण (क्रीडन्तं) (गावः) इन्द्रियाणि (गावः) इन्द्रियाणि (न) (मिमते) (मातुंनशक्नुवन्ति (तिग्मश्टङ्गः) (परीणसं) भूमिं बहुपदार्थवतीं (कृणुते) करोति (दिवा) देवानांसञ्चारकाले

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(हरिः) (विष्णुरूपः) (ददृशे) दृश्यते (नक्तं) असुराणांसञ्चारकाले(ऋजूः) ऋजुगामी विस्पष्टोवराहो दृश्यते ॥१४॥

वह वाराहजी विष्णुकी गतिको अपनी देह में युक्त करते हैं इन्द्रियां उस मायारूपसे क्रीड़ा करनेवाले को नहीं जानसक्तीं वह तीक्ष्णश्रृंगवाला पृथिवी को बहुपदार्थवती करताहै दिवस अर्थात् देवसंचारकाल में विष्णुरूप दीखता है और रात्रि अर्थात् असुरों के संचारकाल में वाराहरूप दीखताहै ॥ १४ ॥

इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम् समूढमस्यपांसुले १५ (विष्णुः) त्रिविक्रमावतारोवामनः (इदं) विश्वं (विचक्रमे) विभज्यक्रमतेस्म (त्रेधा) (पदं)

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(निदधे) भूमावेकंपदमन्तरिक्षे द्वितीयं दिवि तृतीयं (अस्य) पदं (पांसुले) चतुर्दशभुवनमयब्रह्माण्डे (समूढम्) सम्यगन्तर्भूतम् १५ ॥

अमरेश त्रिविक्रमावतार वामनजी इस विश्व को उल्लंघन करते हैं तीन पग रखते हैं एक भूमिपर दूसरा अन्तरिक्षमें तीसरा स्वर्ग में इसका चरण चतुर्दश भुवनमय ब्रह्माण्ड में सम्यक् अन्तर्भूत होताहै १५ यजुर्वेद अ० १८ मं० ७१ ॥

आशुः शिशानोवृषभोनभीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् संक्रन्दनोऽनिमिष एकवीरः शतꣳसेनाअजयत्साकमिन्द्रः १६ (आशुः) आसमन्तात् शुइत्यव्य

क्को शब्दोयस्य स वाराहावतारः (शिशा
नः) शिशिला मन्द्राचलः समुद्रमथने य
स्य शानस्तीच्णकारकः सकूर्मावतारः
(वृषभः) वर्णानांश्रेष्ठो वामनावतारः
(भीमः) असुराणां भयङ्करो नृसिंहाव
तारः (घनाघनः) घनः घनश्यामः अ
घनः बलदेवावतारः (चर्षणीनां) दस्यु
प्रायमनुष्याणां (चोभणः) चोभहेतुर्नि
ष्कलङ्कावतारः (संक्रन्दनः) चत्रियाणां
समाहन्तापरशुरामावतारः (अनिमिषा)
मत्स्यावतारः (न) च (एकवीरः) अद्वै
तोवीरो रामावतारः (इन्द्रः) परमेश्वरः
(साकम्) देवैःसहदेवांशानरादिभिःसह
वा (शतथं) असंख्यातः (सेनाः)

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

देव शत्रूणांसेनाः (अजयत्) १६ ॥

वाराह कूर्म वामन नृसिंह कृष्ण बलदेव निष्कलंक परशुराम मत्स्य रामावतारवाले परमेश्वरने देवताओं वा देवांश मनुष्य आदिके साथ असुरोंकी असंख्य सेनाओं को जीता १६॥

अपारसंसार समुद्रमध्ये समज्जतोमे शरणं किमस्ति ॥ गुरोकृपालोकृपयावदै तद्विश्वेशपादाम्बुजदीर्घनौका १ ॥

(प्रश्न) हे कृपालुगुरुजी ! कृपाकरिकै कहो कि इस अपार संसार समुद्र में मुझ डूबतेहुये को शरण क्याहै (उत्तर) ईश्वरका चरणकमल बड़ी नावहै यही शरण है १ ॥

बन्धोहिकोयोविषयानुरागः कोवावि मुक्तोविषयैर्विरक्तः ॥ कोवास्तिघोरोनरकः

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

स्वदेहः तृष्णाक्षयः स्वर्गपदंकिमस्ति २ ॥

(प्र०) बन्धन क्याहै (उ०) विषयकी चाह (प्र०) विमुक्त को है (उ०) विषय से जीवको विरक्त होना (प्र०) घोरनरक कौनहै (उ०) अपनी देह (प्र०) स्वर्गपद क्या है (उ०) तृष्णाकाक्षय २ ॥

संसारहृत्कः श्रुतिजात्मबोधः कोमोक्ष हेतुः प्रथितः सएव ॥ द्वारंकिमेकं नरक स्यनारी कास्वर्गदाप्राणभृतामहिंसा ३ ॥

(प्र०) संसार छुड़ानेवाला कौनहै (उ०) वेद से आत्माका जानना (प्र०) मुक्ति काहेसे होती है (उ०) इसीसे जो पहले कहा (प्र०) नरकका मुख्यद्वार कौन है (उ०) स्त्री (प्र०) मनुष्योंको स्वर्ग कौनदेताहै (उ०) अहिंसा ३ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

शेतेसुखंकस्तुसमाधिनिष्ठो जागर्त्तिको वासदसद्विवेकी ॥ केशत्रवःसन्तिनिजेन्द्रियाणि तान्येवमित्राणिजितानिकानि ४ ॥

(प्र०) सुखमें कौन सोताहै (उ०) जो समाधिनिष्ठहै (प्र०) जागता कौनहै (उ०) जिसे सत् असत् का विवेक है (प्र०) शत्रु कौनहै (उ०) अपनी इन्द्रियां (प्र०) मित्र कौनहै (उ०) वेही इन्द्रियां जब जीतीगई ४ ॥

कोवादरिद्रोहिविशालतृष्णः श्रीमांश्च कोयस्यसमस्ततोषः ॥ जीवन्मृतः कस्तु निरुद्यमोयः कावामृतास्यात्सुखदादुराशा ५ ॥

(प्र०) दरिद्री कौन है (उ०) बड़ीतृष्णा वाला (प्र०) धनवान् कौन है (उ०) जिसे

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

सब बात में सन्तोष है (प्र०) जीताहुआ कौन मराहै (उ०) जो कुछ उद्यम नहीं करता (प्र०) कौन मरके सुख देनेवाला है (उ०) बुरीआशा ५ ॥

पाशोहिकोयोममताभिधानः संमोहयत्येवसुरेवकास्त्री ॥ कोन्धान्महान्धोमदनातुरोयो मृत्युश्चकोवापयशःस्वकीयम् ६॥

(प्र०) फांसी क्या है (उ०) ममता (प्र०) मदिरा के समान कौन मोहती है (उ०) स्त्री (प्र०) अन्धों में बड़ा अन्धा कौनहै (उ०) जो कामसे व्याकुल है (प्र०) मौत क्या है (उ०) अपना अपयश ६ ॥

कोवागुरुर्योहिहितोपदेष्टा शिष्यस्तु कोवागुरुभक्तएव ॥ कोदीर्घरोगो भवएव साधो किमौषधंतस्यविचारएव ७॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(प्र०) गुरु कौनहै (उ०) जो अच्छा उपदेश करै (प्र०) शिष्य कौनहै (उ०) जो गुरु का भक्तहै (प्र०) हे साधो! बड़ा रोग क्या है (उ०) संसार (प्र०) उस रोगकी औषधी क्याहै (उ०) विचार अर्थात् ब्रह्मविचारहै ७॥

किंभूषणाद्भूषणमस्तिशीलं तीर्थंपरंकिं स्वमनोविशुद्धम् ॥ किमत्रहेयंकनकंचकान्ता श्राव्यंसदाकिंगुरुवेदवाक्यम् ८ ॥

(प्र०) सबमें अच्छा भूषण कौन है (उ०) शील (प्र०) परमतीर्थ कौनहै (उ०) शुद्धमन (प्र०) छोड़ना क्या चाहिये (उ०) धन और स्त्री (प्र०) सदा सुनने के योग्य क्या है (उ०) गुरुके और वेदके वाक्य ८॥

केहेतवोब्रह्मगतेस्तुसन्तु सत्सङ्गतिर्दा

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

नविचारतोषाः ॥ केसन्तिसन्तोखिलवीत
रागा अपास्तमोहाभगवत्परायेे ६ ॥

(प्र०) ब्रह्म मिलने के कौन हेतु हैं (उ०) सत्सङ्ग दान विचार और सन्तोष (प्र०) संत कौन हैं (उ०) जो वीतराग और निर्मोही हैं और भगवान् में तत्पर हैं ९ ॥

कोवाज्वरःप्राणभृतां हि चिन्ता मूर्खो
स्तिकोयस्तुविवेकहीनः ॥ कार्यासदाका
निजदेवभक्तिः किंजीवनंदोषविवर्जितं
यत् १० ॥

(प्र०) मनुष्यों के लिये ज्वर रोग क्या है (उ०) चिन्ता (प्र०) मूर्ख कौन है (उ०) जिसे विवेक नहीं (प्र०) सदा क्या करना (उ०) अपने ईश्वरकी भक्ति (प्र०) जीना

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

किसे कहिये (उ०) जो दोष वर्जित है १० ॥

विद्याहिकाब्रह्मगतिप्रदाया बोधोस्ति कोयस्तुविमुक्तिहेतुः ॥ कोलाभआत्मावग मोहियोवै जितंजगत्केनमनोहियेन ११॥

(प्र०) विद्या कौनहै (उ०) जिससे ब्रह्म मिलै (प्र०) ज्ञान कौनहै (उ०) जो मुक्ति का हेतुहै (प्र०) लाभ क्या है (उ०) आत्म-ज्ञान (प्र०) जगत् किसने जीता (उ०) जिसने मन जीता ११ ॥

शूरान्महाशूरतमोस्तिकोवा मनोज बाणैर्व्यथितोनयोवै ॥ प्राज्ञोतिधीरश्चस मोस्तिकोवा प्राप्तो न मोहोललनाक टाक्षैः १२ ॥

(प्र०) शूरोंमें बड़ाशूर कौनहै (उ०) का·

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मदेव के बाणोंने जिसे दुःख न दिया (प्र०) बड़ा बुद्धिमान् और अतिधीर और सम कौनहै (उ०) जो स्त्री के कटाक्षसे न मोहागया १२ ॥

विषाद्विषंकिंविषयाःसमस्ता दुःखी सदाकोविषयानुरागी ॥ धन्योऽस्तिकोय स्तु परोपकारी कः पूजनीयो ननु तत्त्व दृष्टिः १३ ॥

(प्र०) विषों में विष बड़ा कौनहै (उ०) सबविषय हैं (प्र०) सदादुःखी कौनहै (उ०) जिसका विषय में अनुरागहै (प्र०) धन्य कौन है (उ०) जो परोपकारी है (प्र०) पूजनीय कौन है (उ०) निश्चय करके तत्त्व में दृष्टि जिसकी है १३ ॥

सर्वास्ववस्थास्वपि किं न कार्य्यं किंवा

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

विधेयंविदुषाप्रयत्नात् ॥ स्नेहश्चपापंपठ
नंचधर्मःसंसारमूलंहिकिमस्तिचिन्ता १४

(प्र०) पंडितों को यत्नकरके सब अवस्था
में क्या काम करना चाहिये (उ०) स्नेह और
पाप न करे पढ़ना और धर्मकरे (प्र०) संसार
की जड़ क्या है (उ०) चिन्ता १४ ॥

विज्ञान्महाविज्ञतमोस्तिकोवा नार्य्या
पिशाच्या नहि वञ्चितोयः ॥ काश्टङ्खला
प्राणभृतांहिनारी दिव्यंव्रतं किंच समस्त
दैन्यम् १५ ॥

(प्र०) ज्ञानवानों में बड़ा ज्ञानवान् कौन
है (उ०) जो स्त्रीरूप पिशाचिनी से न ठगाया
गया होय (प्र०) मनुष्यों के लिये बेड़ी क्याहै
(उ०) स्त्री (प्र०) अच्छा व्रत कौनहै (उ०)
सबसे दीनहोना १५ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

ज्ञातुंनशक्यंहिकिमस्तिसर्व्वैर्योषिन्मनोयच्चरितं तदीयम् ॥ का दुस्त्यजा सर्वजनैर्दुराशा विद्याविहीनः पशुरस्ति कोवा १६ ॥

(प्र०) वह क्याहै जो किसी से जाना नहीं जाता (उ०) स्त्रियों के मन और चरित्र (प्र०) सर्वजनों को छोड़नी कौन वस्तु कठिन है (उ०) दुराशा (प्र०) पशु कौन है (उ०) जिसे विद्या नहीं १६ ॥

वासोनसङ्गःसहकैर्विधेयो मूर्खैश्चपापैश्चखलैश्चनीचैः ॥ मुमुक्षुणाकिंत्वरितं विधेयं सत्सङ्गतिर्निर्म्ममतेशभक्तिः १७ ॥

(प्र०) किसके साथ न रहै और किस का सङ्ग न करै (उ०) मूर्ख और पापी और दुष्ट

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

और नीच का संग न करै (प्र०) मुमुक्षु पुरुषों को शीघ्र करना क्या उचित है (उ०) सत्संग निर्म्मोंह ईश्वर की भक्ति १७ ॥

लघुत्वमूलञ्चकिमर्थितैवं गुरुत्वबीजं यदयाचनं हि॥ जातोस्तिकोयस्यपुनर्नजन्म कोवाम्रतोयस्यपुनर्नम्रत्युः १८ ॥

(प्र०) छोटे होने की जड़ क्या है (उ०) मांगना (प्र०) बड़े होने का बीज क्या है (उ०) न मांगना (प्र०) जन्मा कौन (उ०) जो फिर न जन्मै (प्र०) अमर कौनहै (उ०) जो फिर न मरे १८ ॥

मूकश्चकोवाबधिरश्चकोवा युक्तंनवक्तुं समयेसमर्थः ॥ तथ्यंसुपथ्यं न शृणोतिवाक्यं विश्वासपात्रं न किमस्तिनारी १९ ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

(प्र०) गूंगा कौन है और बहरा कौन है (उ०) जो समय के अनुसार बात न कहसके और जो सच और हितकारी बात न सुने (प्र०) विश्वास करने के योग्य कौन नहीं (उ०) स्त्री १६ ॥

तत्त्वंकिमेकंविभुरद्वितीयः किमुत्तमं सच्चरितंयदस्ति ॥ किंकर्मकृत्वानचशोच नीयं सर्वेशसर्वादिसमर्चनाख्यम् २० ॥

(प्र०) एक तत्त्व क्या है (उ०) अद्वितीय ईश्वर (प्र०) उत्तम क्या है (उ०) अच्छा आचरण (प्र०) क्या काम करके शोच न करना चाहिये (उ०) सबों के आदि परमेश्वर की पूजाकरके २० ॥

ॐकारम्पितृरूपेण गायत्रीमातरन्त

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

था ॥ पितरौयोनजानाति सविप्रस्त्वन्यरेतजः २१ ॥

ॐकार पितारूपहै गायत्री माताहै जो ब्राह्मण माता पिताको नहीं जानताहै सो ब्राह्मण अन्यरेतजहै अर्थात् वर्णसंकरहै इस से सब ब्राह्मणों को चाहिये ॐकार पिता और गायत्री माताको अवश्य ध्यान करैं २१ ॥

इति वेदवेदान्तसारशिरोमणि
नामग्रन्थस्समाप्तः ॥

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

इश्तिहार ल्यक्चर सनातनधर्म्म ॥

शिरोपनिषद् अथर्ववेद शिरोखंड ॐ श्री रुद्राचार्य्य वेदवेदान्तसाराशिरोमणि भास्कर भाष्य वेदवाक्य ॥ तप संयुक्तस्य प्रणवस्वरूपं विश्वं देवश्च सत्यं भवति ॐकारः। ॐकारस्य लक्षणांगभावं न जानन्ति नचवैश्याः क्षत्रियाश्च ब्राह्मणाः ॥ प्रथम मंत्रश्चश्रुतिः ॥ सर्वसज्जनों को विदितहो कि ८ तारीख माह अगस्त सन् १८८८ ई० और तारीख १० को दयानन्द कृतोपदेश सभाविलासियोंसे ॐ के अंग, लक्षण, भाव और उनके देवता, वर्णस्वरूप, गुण, तत्व, पद, प्रत्यंग भाव करके प्रश्नको पूँछा परन्तु उत्तर नहीं दिया गया तब दयानन्द कृतोपदेश सभाविलासियों से दयानन्द के पदों की अ-

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

शुद्धता का व्याख्यान किया गया वह कोल के महा सज्जनों को और उक्त सभाविलासियों को प्रकाशित हो ॥

यह वही दयानन्द हैं जिन्हों ने किवाड़ बन्द कर इस अभिप्राय से कपाटानु बन्धीहि लिखा जिस वाक्य से न तौ ऐसा अनुवादही होसक्ता है और न त्रिकाल में बन्धीहि शुद्धही होसक्ता है पुनः देखिये कि जिन्हों ने "शिंशपायाः" के बदले "शिंशपस्य" लिखाहै ठीक है ये गुरुस्य गंगास्य भी कहि डालेंगे । ये वही महात्मा हैं जो अपनी बनाई संध्या में प्रार्थयित्वा लिखते हैं और इतना भी बोध नहीं कि "प्र" के योग "त्वा" होताहै कि नहीं । यह वही महापुरुष हैं जिन्होंने अपने संस्कृत वाक्य प्रबोधके नम्बर ३४ पृष्ठ व ३५ में "रात्रौ काका न जल्पन्ति" लिखा है इतना भी बोध नहीं कि काकवाणी और

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

मनुष्यवाणी में कुछ भेद होना चाहिये कि नहीं ? और फिर जिनके धुर्रे अबोधनिवारण में भी पूरी तरह से उड़ायेगये हैं ? ये वही महापुरुष हैं जिन्हों ने अबोधनिवारण को सब ठीक और सच्चा समझ उत्तर के लिये अलौकिक लेखन लिखे ॥

श्रीकाशीवासी स्वामी भास्करानन्द सरस्वती
व हरिहरानन्द सरस्वती शुभस्थान कोल
अलीगढ़ सरस्वती पाठशालाशिक्षक
पं० देवीदास वल्द राधाकिशन.

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor

इश्तिहार

केनोपनिषद् भाषाटीकासहित =)

सामवेदीय तलवकार शाखीय भाषा टीका सरलमध्य-देशी हिन्दीभाषा में है जिसको पं० यमुनाशङ्कर ने राज-शास्त्री मिहिरचन्द की सहायतासे अनुवाद किया इसमें भी पदों के अन्वयपूर्वक भावार्थ स्पष्ट कियाहै और ऐसा टीका कियाहै कि अल्पज्ञ मनुष्यों के भी समझ में आजावे ॥

ईशावास्य उपनिषद् भाषाटीकास० -)॥

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मण की भाषा टीका सहित—जिसमें मन्त्रों के अर्थ समझने के लिये पदों के अन्वय किये गये और फिर पदार्थकी रीतिपर समझा-कर भावार्थ स्पष्ट किया गया ॥

प्रश्नोपनिषद् भाषा टीकासहित =)

पञ्चोली यमुनाशङ्कर नागर ब्राह्मण की भाषा टीका सहित—इसमें भी सब ऊपरके लिखे हुये अलङ्कारहैं शि-ष्यके पूछे हुये अच्छे प्रश्नोंका उत्तर गुरुने बताकर ब्रह्म-रूप लखाया है ॥ मिलने का पता—

मैनेजर नवलकिशोर प्रेस लखनऊ

CC-0. Digital Donation Received and Uploaded by eGangotri on behalf of Anonymous Donor